facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 12 जनवरी 2026 ● वर्ष 7 ● अंक 26 ● मूल्यः 5 रुपए

सोना-चांदी रिकॉर्ड ऊंचाई पर

अपरा से संभव नहीं है परा का ज्ञान

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी

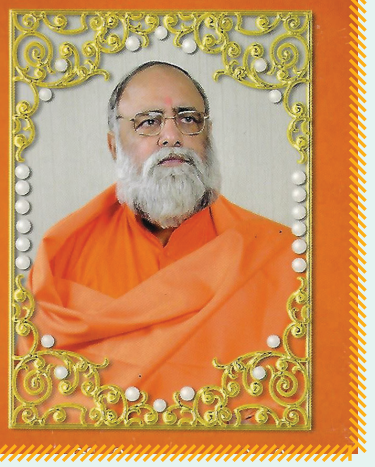

विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

●

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

●

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

भारत-अमेरिका रिश्तों में नया अध्याय

'भारत से ज्यादा जरूरी कोई देश नहीं', नए अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर का बड़ा बयान

@ भारतश्री ब्यूरो

भारत और अमेरिका के रिश्तों में एक नए अध्याय की शुरुआत हो गई है। सोमवार को भारत में अमेरिका के नए राजदूत सर्जियो गोर ने नई दिल्ली में औपचारिक रूप से पदभार संभाल लिया। पदभार संभालते ही उन्होंने ऐसे बयान दिए, जिनसे साफ संकेत मिला कि वॉशिंगटन भारत को सिर्फ एक रणनीतिक साझेदार नहीं, बल्कि अपनी विदेश नीति का केंद्रीय स्तंभ मानता है। गोर ने दो टूक कहा कि अमेरिका के लिए भारत से ज्यादा महत्वपूर्ण कोई देश नहीं है।उनका यह बयान ऐसे समय में आया है, जब दोनों देशों के बीच ट्रेड डील, टैरिफ और तकनीकी सहयोग को लेकर गहन बातचीत चल रही है। गोर ने यह भी स्पष्ट किया कि भारत-अमेरिका ट्रेड डील पर बातचीत रुकी नहीं है और दोनों देशों के अधिकारी लगातार संपर्क में हैं।

नमस्ते से शुरुआत, सम्मान का संदेश

अपने पहले सार्वजनिक संबोधन की शुरुआत सर्जियो गोर ने 'नमस्ते' कहकर की। उन्होंने कहा कि भारत में अमेरिकी राजदूत बनना उनके लिए गर्व और सम्मान की बात है। गोर ने भारत को एक असाधारण राष्ट्र बताते हुए कहा कि यह दुनिया के सबसे पुराने लोकतंत्र और दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का संगम है।उनके शब्दों में, "भारत एक ऐसा देश है, जिसकी ऊर्जा, विविधता और लोकतांत्रिक ताकत पूरी दुनिया को दिशा दिखाती है। यहां काम करना मेरे लिए सम्मान की बात है।"

ट्रेड डील पर खुलकर बोले गोर

ट्रेड डील को लेकर गोर ने कहा कि लोग उनसे लगातार अपडेट पूछ रहे हैं। उन्होंने बताया कि मंगलवार को भारत और अमेरिका के अधिकारियों के बीच इस मुद्दे पर फोन पर बातचीत होने वाली है।गोर ने साफ किया कि भारत दुनिया का बहुत बड़ा देश है और इसी वजह से ट्रेड डील जैसी प्रक्रिया आसान नहीं होती। लेकिन दोनों देश इसे पूरा करने के लिए पूरी गंभीरता से प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ट्रेड भारत-अमेरिका रिश्तों का अहम हिस्सा है, लेकिन यह रिश्ता केवल व्यापार तक सीमित नहीं है।अमेरिकी राजदूत ने कहा कि भारत और अमेरिका सुरक्षा, काउंटर-टेररिज्म, ऊर्जा, टेक्नोलॉजी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे कई अहम क्षेत्रों में मिलकर काम कर रहे हैं। उनके मुताबिक, दोनों देशों की साझेदारी बहुआयामी है और आने वाले समय में यह और मजबूत होगी।उन्होंने यह भी संकेत दिया कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर और एडवांस टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में भारत की भूमिका अमेरिका के लिए बेहद अहम है।

ट्रम्प-मोदी की दोस्ती पर बड़ा बयान

सर्जियो गोर ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दोस्ती को "असली दोस्ती" बताया। उन्होंने कहा कि सच्चे दोस्त असहमत हो सकते हैं, लेकिन अंत में अपने मतभेद सुलझा लेते हैं।गोर ने उम्मीद जताई कि राष्ट्रपति ट्रम्प अगले एक से दो साल में भारत का दौरा कर सकते हैं। अगर ऐसा होता है, तो यह दोनों देशों के रिश्तों को नई ऊंचाई देने वाला कदम माना जाएगा।

गोर को चुनने में ट्रम्प ने क्यों लगाए 7 महीने

जनवरी 2025 में राष्ट्रपति बनने के बाद डोनाल्ड ट्रम्प ने कई देशों के लिए अपने राजदूतों की नियुक्ति कर दी थी, लेकिन भारत जैसे अहम देश के लिए उन्होंने फैसला लेने में करीब सात महीने का समय लिया।अगस्त 2025 में जाकर ट्रम्प ने सर्जियो गोर को भारत का राजदूत नियुक्त किया। इसकी वजह साफ मानी जा रही है। गोर ट्रम्प के बेहद करीबी माने जाते हैं और उनकी 'अमेरिका फर्स्ट' नीति के कट्टर समर्थक हैं।

चुनाव से लेकर व्हाइट हाउस तक, गोर की मजबूत पकड़

सर्जियो गोर ने राष्ट्रपति चुनाव के दौरान ट्रम्प के लिए फंड जुटाने में अहम भूमिका निभाई थी। इसके अलावा वे व्हाइट हाउस में नियुक्तियों की जांच-परख की प्रक्रिया में भी शामिल रहे।दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद ट्रम्प ने गोर को प्रेसिडेंसियल पर्सनल ऑफिस का डायरेक्टर बनाया था। यह पद काफी ताकतवर माना जाता है, क्योंकि इसके जरिए यह तय होता है कि सरकार में कौन-कौन लोग अहम पदों पर आएंगे।

ट्रम्प जूनियर के दोस्त, महंगी किताबों का कारोबार

गोर, ट्रम्प के बेटे डोनाल्ड ट्रम्प जूनियर के करीबी दोस्त हैं। दोनों ने मिलकर 'विनिंग टीम पब्लिशिंग' नाम की एक कंपनी शुरू की, जो ट्रम्प की किताबें प्रकाशित करती है।इस कंपनी की किताबें काफी महंगी मानी जाती हैं। सबसे सस्ती किताब की कीमत भी करीब 6500 रुपए बताई जाती है। इसी कंपनी के जरिए ट्रम्प अब तक तीन किताबें प्रकाशित कर चुके हैं।इनमें एक किताब में पेनसिल्वेनिया की उस रैली की मशहूर तस्वीर भी है, जब ट्रम्प पर जानलेवा हमला हुआ था और वे खून से लथपथ हालत में मुट्ठी बांधकर ताकत का इजहार करते नजर आए थे।

मस्क से टकराव और सत्ता की अंदरूनी राजनीति

सर्जियो गोर का नाम उस वक्त भी सुर्खियों में आया, जब मार्च 2025 में व्हाइट हाउस की एक कैबिनेट मीटिंग के दौरान उनकी एलन मस्क से तीखी बहस हो गई।मस्क ने आरोप लगाया था कि गोर व्हाइट हाउस में गलत तरीके से लोगों की नियुक्ति कर रहे हैं। इस पर गोर नाराज हो गए और उन्होंने मस्क से बदला लेने की बात कही। इसके बाद मस्क ने साफ कर दिया कि वे गोर के साथ काम नहीं करेंगे।कुछ ही समय बाद मस्क ने अपने बनाए डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद गोर ने ट्रम्प को मस्क के करीबी कारोबारी जैरेड इसाकमैन के बारे में जानकारी दी, जिससे उनका नाम NASA प्रमुख की दौड़ से बाहर हो गया।

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

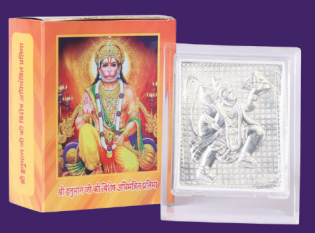

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW

https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

आतिशी वीडियो विवाद में पंजाब पुलिस की चुप्पी

सवालों के घेरे में DGP, सियासत और कानून आमने-सामने

@ आनंद मीणा

दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी की विधायक आतिशी मार्लेना से जुड़े वायरल वीडियो ने देश की राजनीति और कानून व्यवस्था दोनों को एक साथ कठघरे में खड़ा कर दिया है। मामला सिर्फ एक वीडियो तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह केंद्र और राज्यों के बीच संवैधानिक अधिकारों, पुलिस की निष्पक्षता और राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप का बड़ा मुद्दा बन चुका है।पंजाब के डीजीपी गौरव यादव ने इस पूरे विवाद पर खुलकर बोलने से इनकार कर दिया है। चंडीगढ़ में एक अलग मामले की प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान जब उनसे आतिशी वीडियो केस, जालंधर में दर्ज एफआईआर और दिल्ली विधानसभा के नोटिस पर सवाल पूछे गए, तो उन्होंने बार-बार यही कहा कि मामला ऑनगोइंग है और इस पर टिप्पणी नहीं की जा सकती।

क्या है पूरा विवाद

दरअसल, सोशल मीडिया पर दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी मार्लेना का एक वीडियो वायरल हुआ। भाजपा नेताओं का आरोप है कि इस वीडियो में आतिशी ने सिख गुरु का अपमान किया है। दिल्ली सरकार में मंत्री कपिल मिश्रा समेत कई भाजपा नेताओं ने इस वीडियो को अपने सोशल मीडिया अकाउंट से साझा किया और कड़ी प्रतिक्रिया दी।इसके बाद यह मामला पंजाब तक पहुंच गया। जालंधर में इस वीडियो को साझा करने और कथित रूप से धार्मिक भावनाएं आहत करने के आरोप में एफआईआर दर्ज कर ली गई। इस कार्रवाई के बाद सियासी पारा और चढ़ गया।

जालंधर FIR और दिल्ली विधानसभा का हस्तक्षेप

जालंधर में एफआईआर दर्ज होने के बाद दिल्ली विधानसभा ने इस पूरे मामले का संज्ञान लिया। विधानसभा की ओर से पंजाब के डीजीपी गौरव यादव, स्पेशल डीजीपी साइबर क्राइम वी नीरजा और जालंधर की पुलिस कमिश्नर धनप्रीत कौर को नोटिस जारी किया गया।दिल्ली विधानसभा का कहना है कि यह मामला अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संवैधानिक अधिकारों और अंतरराज्यीय अधिकार क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। ऐसे में पुलिस कार्रवाई का आधार क्या है, यह स्पष्ट होना चाहिए।

प्रेस कॉन्फ्रेंस में सवाल, जवाबों से बचते DGP

डीजीपी गौरव यादव चंडीगढ़ में अमृतसर के एक सरपंच हत्याकांड को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस करने पहुंचे थे। लेकिन पत्रकारों के सवालों का रुख बार-बार आतिशी वीडियो विवाद की ओर मुड़ गया।जब उनसे पूछा गया कि ब्रीच ऑफ प्रिविलेज यानी विशेषाधिकार हनन को लेकर उनका क्या कहना है, तो उन्होंने साफ कहा कि वह ऑनगोइंग मामलों में कोई टिप्पणी नहीं करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें अभी तक भाजपा नेता सुनील जाखड़ का कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ है।डीजीपी ने यह भी दोहराया कि उनका मुख्य रोल पॉलिसी मेकिंग का होता है। जिला स्तर पर जो कार्रवाई होती है, वह स्थानीय पुलिस की जिम्मेदारी होती है।

विपक्ष का आरोप, पुलिस पर राजनीतिक दबाव?

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान विपक्ष की ओर से उठाए जा रहे आरोपों पर भी सवाल पूछे गए। विपक्ष का कहना है कि पंजाब पुलिस राजनीतिक दबाव में काम कर रही है। उदाहरण देते हुए कहा गया कि कपिल मिश्रा द्वारा शेयर किए गए वीडियो पर तुरंत फोरेंसिक जांच की बात सामने आई, जबकि पटियाला के एसएसपी की कॉल रिकॉर्डिंग मामले में ऐसा नहीं हुआ।इस पर डीजीपी गौरव यादव ने कहा कि पंजाब पुलिस पूरी तरह निष्पक्ष है और हर जांच मेरिट के आधार पर की जाती है। इसके आगे उन्होंने कुछ भी कहने से इनकार कर दिया।

FIR किस आधार पर दर्ज हुई, जवाब नहीं

जब यह सवाल किया गया कि क्या कपिल मिश्रा की सोशल मीडिया पोस्ट के आधार पर केस दर्ज किया गया है और क्या यह जानकारी सार्वजनिक डोमेन में नहीं होनी चाहिए, तो डीजीपी ने कहा कि मामला दिल्ली विधानसभा के संज्ञान में है और इस पर वह यहां कुछ नहीं कहना चाहते।दिल्ली विधानसभा से नोटिस मिलने के सवाल पर भी डीजीपी ने कोई जवाब नहीं दिया।

सुनील जाखड़ का पत्र और नई मांग

इस पूरे मामले में पंजाब भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सुनील जाखड़ ने डीजीपी गौरव यादव को एक पत्र लिखा है। पत्र में उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान का एक वीडियो भी वायरल हो रहा है, जिससे धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं।जाखड़ ने मांग की कि इस वीडियो की तुरंत फोरेंसिक जांच कराई जाए, ताकि सच्चाई सामने आ सके। उन्होंने कहा कि मामला धर्म और सूबे के मुख्यमंत्री से जुड़ा हुआ है, इसलिए इसकी गंभीरता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

फोरेंसिक जांच की दो टूक मांग

सुनील जाखड़ ने अपने पत्र में साफ शब्दों में लिखा है कि अगर फोरेंसिक जांच में वीडियो सही पाया जाता है, तो यह किसी उच्च संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति के लिए पूरी तरह अनुचित आचरण होगा। ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति को मुख्यमंत्री पद पर बने रहने का नैतिक अधिकार नहीं होना चाहिए।वहीं, अगर जांच में वीडियो फर्जी या गढ़ा हुआ साबित होता है, तो इसे बनाने, फैलाने और प्रचारित करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।

निष्पक्षता के लिए चंडीगढ़ फोरेंसिक टीम की मांग

भाजपा की ओर से यह भी मांग की गई है कि वीडियो की जांच चंडीगढ़ फोरेंसिक टीम से कराई जाए। पार्टी का तर्क है कि पहले भी पटियाला के एसएसपी से जुड़े ऑडियो टेप मामले में चंडीगढ़ की फोरेंसिक टीम से जांच कराई गई थी।भाजपा का कहना है कि इससे जांच में निष्पक्षता, पारदर्शिता और जनता का भरोसा बना रहेगा।

कानून बनाम राजनीति की लड़ाई

आतिशी वीडियो विवाद अब केवल एक कानूनी मामला नहीं रह गया है। यह राजनीति और कानून के बीच खींचतान का उदाहरण बन चुका है। एक ओर भाजपा इसे धार्मिक भावनाओं और सार्वजनिक मर्यादा का सवाल बता रही है, वहीं आम आदमी पार्टी इसे राजनीतिक बदले की कार्रवाई करार दे रही है।

दिल्ली विधानसभा का हस्तक्षेप इस विवाद को और संवैधानिक बना देता है। सवाल यह भी है कि क्या किसी राज्य की पुलिस दूसरे राज्य के नेताओं से जुड़े मामलों में इस तरह कार्रवाई कर सकती है।

DGP की चुप्पी और बढ़ते सवाल

डीजीपी गौरव यादव की लगातार चुप्पी और सवालों से बचने का रवैया भी चर्चा का विषय बना हुआ है। पुलिस प्रमुख का यह कहना कि उनका रोल केवल पॉलिसी मेकिंग तक सीमित है, कई सवाल खड़े करता है। आम जनता जानना चाहती है कि जब मामला इतना संवेदनशील है, तो जिम्मेदारी आखिर किसकी है।अब निगाहें दिल्ली विधानसभा के अगले कदम और पंजाब पुलिस की जांच पर टिकी हैं।

यह देखना अहम होगा कि फोरेंसिक जांच होती है या नहीं, और होती है तो उसकी रिपोर्ट क्या कहती है।एक बात साफ है कि आतिशी वीडियो विवाद ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि सोशल मीडिया के दौर में एक वीडियो पूरे राजनीतिक तंत्र को हिला देने की ताकत रखता है। सवाल सिर्फ वीडियो का नहीं, बल्कि उसकी जांच, कार्रवाई और निष्पक्षता का है। यही इस पूरे विवाद की असली कसौटी होगी।

सोमनाथ मंदिर का विध्वंस: गजनवी की असली वजहें क्या थीं?

हमले का ऐतिहासिक संदर्भ

सोमनाथ मंदिर गुजरात के प्रभास पाटन में स्थित एक पुराना शिव मंदिर था, जो हिंदू धर्म के लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण जगह थी। यह मंदिर समुद्र के किनारे था और व्यापार का बड़ा केंद्र था, जहां से अरब देशों के साथ व्यापार होता था। मंदिर में सोना, चांदी, मोती और हीरे जैसे कीमती सामान जमा थे, जो दान और कर से आते थे। मंदिर में रोज 350 लोग गाना और नाचना करते थे, और यह 10,000 गांवों से कमाई करता था। महमूद गजनवी अफगानिस्तान के गजनी शहर का शासक था, जो 998 से 1030 तक राज करता रहा। वह तुर्क मूल का था और इस्लाम धर्म का कट्टर अनुयायी था। उसने भारत पर 17 बार हमले किए, जिनमें से 15वां हमला सोमनाथ पर था। 1025 में वह 30,000 घुड़सवारों के साथ गजनी से निकला और रेगिस्तान पार करके गुजरात पहुंचा। रास्ते में उसने कई किले जीते और स्थानीय राजाओं को हराया। गुजरात का राजा भीम देव भाग गया, और मंदिर के रक्षक उसे बचाने में असफल रहे। जनवरी 1026 में महमूद ने मंदिर पर हमला किया, जहां 50,000 लोग मारे गए। उसने शिव लिंग तोड़ा और बहुत सारा धन लूटा, जो लगभग 20 मिलियन दीनार था। यह लूट वह गजनी ले गया और वहां मस्जिद में इस्तेमाल किया। इतिहासकारों के अनुसार, यह हमला भारत के इतिहास में एक बड़ा घटना था, लेकिन उस समय के लोग इसे सामान्य लूट की तरह देखते थे। जैन और संस्कृत स्रोतों में इसे ज्यादा महत्व नहीं दिया गया, बल्कि स्थानीय लूट और समुद्री डाकुओं की समस्या पर ध्यान था। व्यापार जारी रहा और अरब व्यापारी वहां रहते रहे। यह घटना दिखाती है कि उस समय धार्मिक और आर्थिक बातें आपस में जुड़ी हुई थीं। क्या यह सिर्फ लूट था या कुछ और? यह सोचने की बात है।

धन का लालच: मुख्य वजह

महमूद गजनवी के सोमनाथ मंदिर पर हमले की सबसे बड़ी वजह धन की लूट थी। उस समय भारत के मंदिर बहुत अमीर थे, क्योंकि लोग दान देते थे और व्यापार से कमाई होती थी। सोमनाथ मंदिर व्यापार का केंद्र था, जहां से घोड़े, शराब, धातु और मसाले का व्यापार होता था। मंदिर की संपत्ति व्यापार में लगाई जाती थी, जिससे और ज्यादा कमाई होती थी। महमूद को भारत की अमीरी के बारे में पता था, और वह अपनी सेना और शहर को चलाने के लिए पैसे की जरूरत थी। उसके साम्राज्य को बनाए रखने के लिए लूट जरूरी थी। इतिहासकार कहते हैं कि उसने मथुरा और अन्य मंदिरों से भी बहुत धन लूटा था। सोमनाथ से वह 20 मिलियन दीनार ले गया, जो आज के समय में अरबों रुपये के बराबर है। उसके लेखकों ने लिखा कि मंदिर में सोने की चेन थी जो 200 मन वजन की थी, और हीरे इतने कि गिनती नहीं हो सकती। लेकिन ये बातें बढ़ा-चढ़ाकर लिखी गईं। असल में, महमूद की सेना को रेगिस्तान पार करने के लिए ऊंट और संसाधन चाहिए थे, और लूट से वह सब मिलता था। कुछ स्रोत कहते हैं कि वह इस्लाम के नाम पर लूट करता था, लेकिन मुख्य मकसद आर्थिक था। वह हिंदू धर्म के खिलाफ नहीं था, बल्कि जहां धन था, वहां हमला करता था। जैन स्रोतों में लिखा है कि महमूद जैन मूर्तियों को नहीं तोड़ सका, जो दिखाता है कि लूट चुनिंदा थी। व्यापारियों ने बाद में मूर्ति वापस लाने की कोशिश की, जो व्यापार की महत्वपूर्णता बताती है। क्या धन की भूख ने इतिहास बदल दिया? यह विचार करने लायक है कि आर्थिक जरूरतें कैसे युद्धों को जन्म देती हैं।

धार्मिक उत्साह: एक और कोण

महमूद गजनवी को इस्लाम का रक्षक माना जाता था, और सोमनाथ मंदिर का विध्वंस उसके धार्मिक उत्साह से जुड़ा था। वह सुन्नी इस्लाम का पालन करता था और मूर्ति पूजा के खिलाफ था। उसके समय के लेखकों ने लिखा कि हिंदू लोग सोमनाथ की मूर्ति को देवता मानते थे, और अगर वह टूट गई तो अन्य देवता नाराज थे। महमूद ने इसे चुनौती मानकर हमला किया। तुर्क-पर्सियन किताबों में उसे 'मूर्ति भंजक' कहा गया, और कहा गया कि मंदिर की मूर्ति अरब की पुरानी देवी मनात थी, जो इस्लाम से पहले की थी। लेकिन इतिहासकार कहते हैं कि यह कहानी बनाई गई थी ताकि महमूद को हीरो दिखाया जाए। वह शिया और इस्माइली जैसे अन्य मुस्लिम समूहों के खिलाफ भी था, और भारत में हमले करके अपनी सत्ता मजबूत करता था। मंदिर तोड़ने से वह इस्लाम के चैंपियन बन गया, और खलीफा ने उसे उपाधियां दीं। लेकिन क्या यह सिर्फ धर्म था? कुछ स्रोत कहते हैं कि वह धर्म के नाम पर लूट करता था, लेकिन हिंदुओं को जबरदस्ती मुसलमान नहीं बनाया। जैन किताबों में लिखा है कि महमूद जैन मंदिरों को नहीं छू सका, जो शैव धर्म पर जीत दिखाती है। संस्कृत शिलालेखों में हमले का जिक्र नहीं है, बल्कि स्थानीय समस्या पर फोकस है। 1264 में एक मस्जिद बनाने के लिए हिंदू और मुस्लिम ने साथ काम किया, जो दिखाता है कि धर्म से ज्यादा व्यापार महत्वपूर्ण था। यह घटना बताती है कि धार्मिक कारण अक्सर राजनीतिक और आर्थिक बातों से जुड़े होते हैं। क्या धर्म युद्ध की असली वजह होता है या सिर्फ बहाना? यह सोचने की बात है।

राजनीतिक खेल: छिपा हुआ मकसद

सोमनाथ पर हमला महमूद गजनवी की राजनीतिक रणनीति का हिस्सा था। वह अपने साम्राज्य को मजबूत करना चाहता था और भारत के राजाओं को कमजोर करके अपनी ताकत दिखाना चाहता था। उसके हमले मनोवैज्ञानिक युद्ध थे, जो दुश्मनों को डराते थे। भारत के राजा आपस में बंटे हुए थे, जैसे राजपूत एकजुट नहीं थे, जिससे महमूद आसानी से जीतता गया। वह पंजाब को अपने कब्जे में रखना चाहता था और गुजरात से ट्रिब्यूट लेना चाहता था। सोमनाथ तोड़ने से वह मुस्लिम दुनिया में हीरो बन गया, और उसके सैनिकों का मनोबल बढ़ा। इतिहासकार कहते हैं कि उसके हमले स्थायी राज्य बनाने के लिए नहीं थे, बल्कि लूट और डर फैलाने के लिए थे। वापसी में उसे जाटों और अन्य से लड़ना पड़ा, लेकिन वह गजनी लौट गया। जैन स्रोतों में लिखा है कि स्थानीय राजा खुद मंदिर लूटते थे, जो दिखाता है कि समस्या आंतरिक भी थी। महमूद के बाद मंदिर कई बार बनाया गया, जैसे कुमारपाल ने 12वीं सदी में पत्थर का मंदिर बनवाया। 1842 में ब्रिटिश ने मंदिर के दरवाजे वापस लाने की बात की, जो राजनीतिक थी। यह दिखाता है कि घटना को राजनीति में इस्तेमाल किया जाता रहा। क्या युद्ध राजनीति का हिस्सा होते हैं या धर्म का? यह विचार करने लायक है कि कैसे पुरानी घटनाएं आज की राजनीति को प्रभावित करती हैं।

आधुनिक नजरिया: सबक और बहस

आज सोमनाथ मंदिर का विध्वंस इतिहास की किताबों में एक बड़ा अध्याय है, लेकिन इसके बारे में अलग-अलग विचार हैं। कुछ राष्ट्रवादी लेखक इसे हिंदू-मुस्लिम टकराव की शुरुआत मानते हैं, जैसे केएम मुंशी ने अपनी किताब में इसे trauma कहा। लेकिन इतिहासकार रोमिला थापर कहती हैं कि उस समय यह हिंदू-मुस्लिम विभाजन नहीं पैदा किया, बल्कि स्थानीय व्यापार और राजनीति से जुड़ा था। ब्रिटिश समय में इसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया ताकि विभाजन बढ़े। मंदिर कई बार टूटा और बना, जैसे 1951 में नया मंदिर बनाया गया। आज यह जगह पर्यटन और धार्मिक केंद्र है। इंटरनेट पर चर्चा होती है कि क्या महमूद सिर्फ लुटेरा था या धार्मिक योद्धा। कुछ स्रोत कहते हैं कि उसके हमले भारत की एकता की कमी दिखाते हैं। जैन और संस्कृत स्रोतों से पता चलता है कि लोग जल्दी भूल जाते थे और जीवन चलता रहता था। 15वीं सदी में एक बोहरा ने मंदिर की रक्षा की, जो एकता दिखाती है। यह घटना हमें सिखाती है कि इतिहास को एक तरफ से नहीं देखना चाहिए, बल्कि कई कोणों से। क्या पुरानी घटनाएं आज के रिश्तों को प्रभावित करती हैं? यह सोचने की बात है कि कैसे हम इतिहास से सीखकर आगे बढ़ सकते हैं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

बजट 2026

भारत का केंद्रीय बजट कैसे तैयार होता है, एक सरल गहराई वाली झलक

बजट की शुरुआत: महीनों पहले शुरू होती है योजना

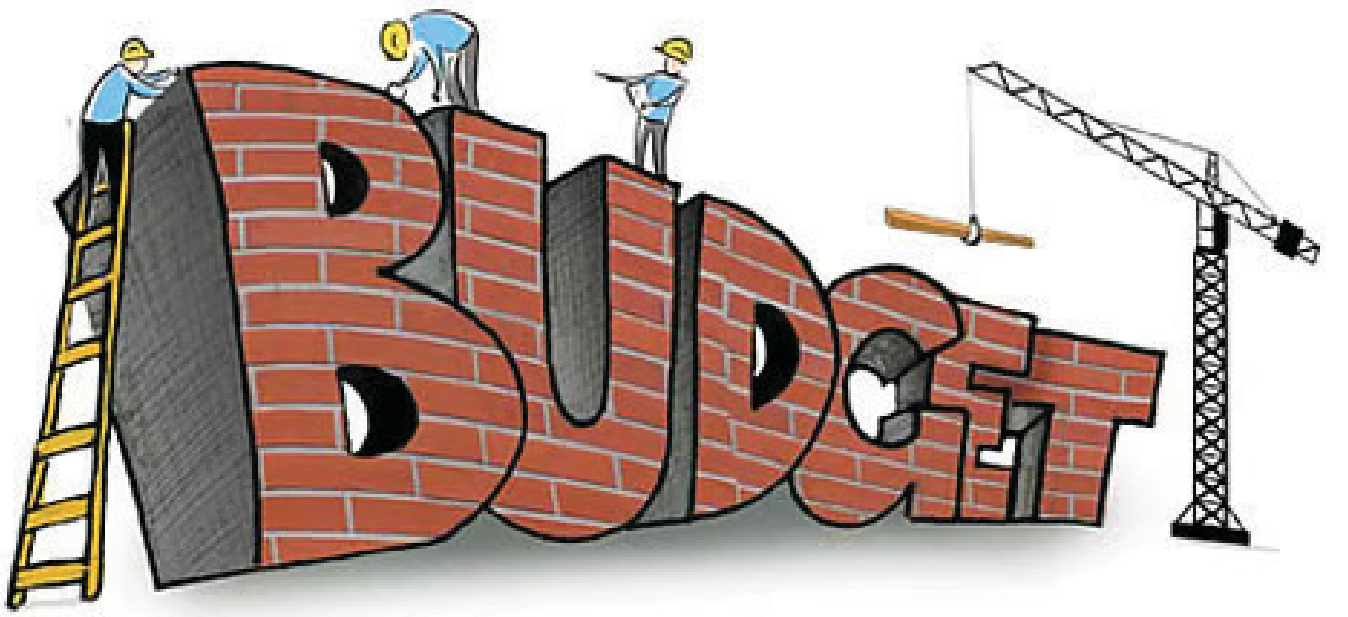

भारत का केंद्रीय बजट हर साल देश की आर्थिक दिशा तय करता है, लेकिन इसकी तैयारी एक लंबी और सावधानी वाली प्रक्रिया है जो महीनों पहले शुरू हो जाती है। आमतौर पर, सितंबर या अक्टूबर में वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों का विभाग सभी मंत्रालयों, राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों और स्वायत्त संस्थाओं को एक सर्कुलर जारी करता है। इस सर्कुलर में अगले वित्तीय वर्ष के लिए राजस्व और व्यय के अनुमान मांगे जाते हैं। बजट 2026-27 के लिए, यह प्रक्रिया सितंबर 2025 में शुरू हुई थी, जहां मंत्रालयों को 3 अक्टूबर 2025 तक प्रारंभिक अनुमान जमा करने थे। प्रत्येक मंत्रालय तीन तरह के आंकड़े देता है: अगले साल के बजट अनुमान, चालू वर्ष के संशोधित अनुमान और पिछले वर्ष के वास्तविक आंकड़े। यह इसलिए जरूरी है ताकि पुरानी गलतियों से सीखा जा सके और यथार्थवादी योजना बनाई जा सके। वित्त मंत्रालय इन अनुमानों की जांच करता है, जहां वित्तीय सलाहकार सुनिश्चित करते हैं कि सब कुछ सही और गोपनीय रहे। इस चरण में, पिछले वर्षों के रुझानों, मुद्रास्फीति, वेतन वृद्धि और कार्यक्रमों के विस्तार को ध्यान में रखा जाता है। बजट की यह शुरुआती तैयारी देश की आर्थिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह तय करती है कि सरकार कितना कमाएगी और कितना खर्च करेगी। लेकिन क्या आपने सोचा है कि इतने बड़े देश में इतने सारे विभागों से जानकारी इकट्ठा करना कितना चुनौतीपूर्ण होता है? इसमें समन्वय की कमी से देरी हो सकती है, फिर भी प्रक्रिया सख्त समयसीमा के साथ चलती है। हाल के वर्षों में, तकनीक जैसे पब्लिक फाइनेंशियल मैनेजमेंट सिस्टम (पीएफएमएस) ने इस काम को आसान बनाया है, जहां रीयल-टाइम डेटा ट्रैकिंग होती है। यह चरण बजट को सिर्फ संख्या का खेल नहीं, बल्कि देश की जरूरतों का प्रतिबिंब बनाता है, जहां संतुलित विकास पर जोर दिया जाता है। कुल मिलाकर, यह प्रक्रिया दिखाती है कि बजट सिर्फ एक दस्तावेज नहीं, बल्कि लाखों लोगों की उम्मीदों का आधार है।

आंकड़ों की जांच और समीक्षा: वित्त मंत्रालय की मुख्य भूमिका

एक बार जब सभी मंत्रालय अपने अनुमान जमा कर देते हैं, तो वित्त मंत्रालय की बजट डिवीजन इनकी गहन जांच शुरू करती है। यह चरण अक्टूबर से नवंबर तक चलता है, जहां अधिकारियों द्वारा प्रस्तावों की जरूरत, यथार्थता और प्राथमिकताओं के साथ तालमेल देखा जाता है। बजट 2026 के लिए, प्री-बजट मीटिंग्स 9 अक्टूबर 2025 से शुरू हुईं और मध्य नवंबर तक चलीं, जिनकी अध्यक्षता व्यय सचिव ने की। इन मीटिंग्स में फंड की जरूरत, राजस्व और व्यय पर चर्चा होती है। अगर कोई मतभेद होता है, तो अंतिम फैसला कैबिनेट या प्रधानमंत्री पर निर्भर करता है। वित्त मंत्रालय नीति आयोग (नीति आयोग) और आर्थिक विशेषज्ञों से सलाह लेता है ताकि बजट जीडीपी वृद्धि, गरीबी उन्मूलन और अन्य लक्ष्यों से जुड़े। राजस्व अनुमान सेंट्रल बोर्ड ऑफ डायरेक्ट टैक्सेस (सीबीडीटी) और सेंट्रल बोर्ड ऑफ इनडायरेक्ट टैक्सेस एंड कस्टम्स (सीबीआईसी) द्वारा तैयार किए जाते हैं, जो टैक्स और नॉन-टैक्स स्रोतों को मिलाकर बनते हैं। व्यय को राजस्व और पूंजीगत श्रेणियों में बांटा जाता है, जहां राजस्व बजट दैनिक खर्च जैसे वेतन, पेंशन और सब्सिडी कवर करता है, जबकि पूंजीगत बजट बुनियादी ढांचे और संपत्तियों पर फोकस करता है। इस समीक्षा में, पिछले वर्षों के डेटा, आर्थिक मॉडल और मान्यताओं जैसे जीडीपी ग्रोथ, मुद्रास्फीति और कमोडिटी प्राइस को शामिल किया जाता है। उदाहरण के लिए, तेल की कीमत $80 प्रति बैरल मानकर अनुमान लगाए जाते हैं। चुनौतियां जैसे आर्थिक अनिश्चितताएं, राजनीतिक दबाव और समन्वय की कमी यहां उभरती हैं, लेकिन प्रक्रिया संतुलित दृष्टिकोण अपनाती है। हालिया अपडेट्स में, एआई और मशीन लर्निंग का इस्तेमाल अनुमानों को बेहतर बनाने के लिए हो रहा है। यह चरण सोचने पर मजबूर करता है कि बजट में हर संख्या के पीछे कितनी मेहनत है, जो देश की वित्तीय सुरक्षा को मजबूत बनाती है।

परामर्श और आवंटन: हितधारकों की आवाज शामिल करना

बजट तैयारी का यह हिस्सा सबसे महत्वपूर्ण है, जहां विभिन्न हितधारकों से परामर्श लिया जाता है ताकि बजट सबकी जरूरतों को प्रतिबिंबित करे। नवंबर से दिसंबर तक, वित्त मंत्री वरिष्ठ अधिकारियों, विशेषज्ञों, किसानों, व्यापारियों और सिविल सोसाइटी से मिलते हैं। बजट 2026-27 के लिए, ये परामर्श आर्थिक स्थिरता और निवेश संतुलन पर केंद्रित हैं, जहां केंद्रीय पूंजीगत व्यय को जीडीपी के 3.2% तक बढ़ाने की बात है। नीति आयोग विकास योजनाओं पर इनपुट देता है, जबकि मुख्य आर्थिक सलाहकार आर्थिक स्थितियों पर मार्गदर्शन करता है। अगर संसाधन सीमित हों, तो प्राथमिकताओं के आधार पर कटौती या संशोधन होते हैं। राजस्व स्रोतों जैसे उधार, बचत और बिक्री को ध्यान में रखकर आवंटन तय किया जाता है। यह प्रक्रिया दिसंबर के अंत तक पूरी होती है, जहां यूबीआईएस (यूनियन बजट इंफॉर्मेशन सिस्टम) में अंतिम सीलिंग अपडेट की जाती है। परामर्श बजट को सिर्फ सरकारी दस्तावेज नहीं, बल्कि जन-केंद्रित बनाते हैं, जहां बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया जाता है। लेकिन क्या यह पर्याप्त है? कभी-कभी राजनीतिक विचारों से प्रभावित होकर, कुछ क्षेत्रों को ज्यादा महत्व मिलता है, जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं। फिर भी, प्रक्रिया पारदर्शिता और दक्षता पर जोर देती है, जैसे कि फाइनेंशियल रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड बजट मैनेजमेंट एक्ट के तहत खुलासे। यह चरण दिखाता है कि बजट बनाना एक टीम वर्क है, जहां कई कोणों से सोचा जाता है ताकि देश की प्रगति संतुलित रहे।

अंतिम तैयारी और गोपनीयता: हलवा समारोह का रहस्य

बजट के अंतिम चरण में गोपनीयता सबसे ऊपर होती है, जो बाजारों पर असर से बचाने के लिए जरूरी है। दिसंबर के अंत या जनवरी की शुरुआत में, प्रस्तावों को कैबिनेट या प्रधानमंत्री की मंजूरी मिलती है। उसके बाद, हलवा समारोह होता है, जो प्रस्तुति से 9-10 दिन पहले मनाया जाता है। इस समारोह में वित्त मंत्री अधिकारियों के साथ हलवा बांटते हैं, जो अंतिम ड्राफ्टिंग और प्रिंटिंग की शुरुआत का प्रतीक है। बजट 2026 के लिए, यह जनवरी 2026 के अंत में होगा। समारोह के बाद, शामिल अधिकारी उत्तर ब्लॉक में बंद रहते हैं, जहां कोई बाहरी संपर्क नहीं होता। 'ब्लू शीट' जैसे गोपनीय दस्तावेज तैयार किए जाते हैं, जो मुख्य आंकड़ों को रखते हैं। आर्थिक सर्वे 29 जनवरी को जारी होता है, जो बजट से पहले आर्थिक स्थिति की समीक्षा देता है। यह गोपनीयता पुरानी परंपरा है, लेकिन आधुनिक चुनौतियों जैसे साइबर खतरे से निपटने के लिए सुरक्षा बढ़ाई गई है। यह चरण विचारोत्तेजक है, क्योंकि यह दिखाता है कि बजट कितना संवेदनशील है – एक छोटी सी लीक से अर्थव्यवस्था हिल सकती है। फिर भी, यह प्रक्रिया विश्वास और अनुशासन पर टिकी है, जहां महीनों की मेहनत एक सुरक्षित वातावरण में पूरी होती है।

बजट की प्रस्तुति और पारित होना: संसद का अंतिम पड़ाव

अंत में, बजट 1 फरवरी को संसद में पेश किया जाता है, जहां वित्त मंत्री लोकसभा में भाषण देते हैं और राज्यसभा में दस्तावेज रखते हैं। बजट 2026 के लिए, यह 1 या 2 फरवरी 2026 को हो सकता है। प्रस्तुति के बाद, सामान्य चर्चा होती है, फिर संसदीय समितियां विस्तार से जांच करती हैं। लोकसभा में डिमांड फॉर ग्रांट्स पर बहस होती है, जहां मंत्रालयों के व्यय की मंजूरी दी जाती है। एप्रोप्रिएशन बिल फंड के इस्तेमाल को अधिकृत करता है, जबकि फाइनेंस बिल टैक्स बदलाव लागू करता है। अगर चुनाव या अन्य कारण से देरी हो, तो अंतरिम वोट ऑन अकाउंट लिया जाता है। एक बार पास होने पर, मंत्रालय फंड पाते हैं और योजनाएं शुरू होती हैं। यह चरण लोकतंत्र का सार है, जहां संसद सरकार की योजनाओं पर नजर रखती है। लेकिन क्या यह पर्याप्त जांच है? कभी-कभी बहुमत से जल्दी पास हो जाता है, जबकि विपक्ष के सुझाव अनदेखे रहते हैं। फिर भी, प्रक्रिया संतुलित दृष्टिकोण अपनाती है, जहां जनता की आवाज संसद के माध्यम से शामिल होती है। यह पूरा सफर दिखाता है कि बजट देश की आर्थिक कहानी का हिस्सा है, जो विकास की दिशा तय करता है।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 12 जनवरी 2026 , विक्रम संवत 2080

तीसरा विश्व युद्ध

यह सवाल बार-बार दुनिया के सामने उठ रहा है कि क्या दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की तरफ बढ़ रही है। मैंने भी इस विषय पर गंभीरता से सोचा है और मुझे यह बात साफ दिखाई देती है की दुनिया में अभी तीसरे विश्व युद्ध की कोई संभावना नहीं है। क्योंकि पहली बात यह है कि ट्रंप को अमेरिका में पूर्ण समर्थन प्राप्त नहीं है दूसरी बात यह है कि रूस और चीन मिलकर तीसरे विश्व युद्ध का नेतृत्व नहीं कर सकते।ये यह युद्ध नहीं लड़ेंगे क्योंकि इनमें युद्ध लड़ने की इतनी बड़ी ताकत नहीं है। तीसरा विश्व युद्ध तभी हो सकता है जब भारत तथा नाटो के कई देश मिलकर रूस और चीन के साथ एकजुट हो जाए और अमेरिका को अलग-थलग कर दें। ऐसी अभी कोई संभावना नहीं है कि भारत और नैटो के अन्य देश अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की सीमा तक चले जाएंगे इसलिए मेरा यह मानना है कि अभी तीसरे विश्व युद्ध की अटकल लगाना जल्दबाजी है। यह बात जरूर दिखती है कि ट्रंप के रहते हुए इस तरह की अटकलें चलती रहेगी क्योंकि ट्रंप तानाशाही की तरफ बढ़ते रहेंगे और भारत तथा नेटो के अन्य देश इस परिस्थिति में दुविधा में फंसे रहेंगे लेकिन मुझे ऐसी संभावना दिखती है की ट्रंप या तो अपनी नीतियों में कुछ सुधार करेंगे या अमेरिका की जनता इस विषय में कुछ सोचेगी। किसी विश्व युद्ध की चर्चा में मुस्लिम देशों की कोई भूमिका नहीं है क्योंकि वे तो अपने आप मरे हुए हैं।

रामवीर श्रेष्ठ

सोना-चांदी की चमक और अर्थव्यवस्था का संकेत

@ **अनुराग पाठक**

सोने और चांदी के दाम जब रिकॉर्ड तोड़ते हैं, तो यह सिर्फ सर्राफा बाजार की खबर नहीं होती। यह अर्थव्यवस्था की नब्ज, वैश्विक अनिश्चितताओं और निवेशकों के मनोविज्ञान का आईना होती है। 12 जनवरी को सोना 1.40 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम और चांदी 2.56 लाख रुपये प्रति किलो के स्तर पर पहुंच गई। यह आंकड़े चौंकाते जरूर हैं, लेकिन अचानक नहीं हैं। यह तेजी कई महीनों से तैयार हो रही थी।सवाल यह नहीं है कि सोना और चांदी महंगे क्यों हुए। असली सवाल यह है कि यह तेजी हमें किस ओर इशारा कर रही है।

सोना हमेशा से संकट का साथी रहा है। जब दुनिया अस्थिर होती है, बाजार डरते हैं और भविष्य धुंधला दिखता है, तब निवेशक कागजी संपत्तियों से निकलकर ठोस धातु की ओर लौटते हैं। आज वही हो रहा है। अमेरिका में ब्याज दरों में कटौती की संभावना से डॉलर कमजोर पड़ा है। डॉलर कमजोर होता है, तो सोना मजबूत होता है। यह एक पुराना लेकिन अटल नियम है।

दूसरी ओर, वैश्विक राजनीति का माहौल लगातार असहज है। रूस-यूक्रेन युद्ध खत्म होने का नाम नहीं ले रहा। मिडिल ईस्ट में तनाव बना हुआ है। चीन-अमेरिका संबंधों में अविश्वास गहराता जा रहा है। इन हालात में निवेशक जोखिम नहीं लेना चाहते। उन्हें सुरक्षा चाहिए और सुरक्षा का सबसे भरोसेमंद नाम आज भी सोना है।लेकिन इस बार कहानी सिर्फ सोने तक सीमित नहीं है। चांदी ने जो छलांग लगाई है, वह इस दौर की सबसे अहम कहानी कहती है। चांदी अब केवल आभूषण या सिक्कों तक सीमित धातु नहीं रही। वह सोलर पैनलों, इलेक्ट्रिक व्हीकल्स, इलेक्ट्रॉनिक्स और सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री की रीढ़ बन चुकी है। ग्रीन एनर्जी और डिजिटल अर्थव्यवस्था की रफ्तार जितनी तेज होगी, चांदी की मांग उतनी ही बढ़ेगी।

यही वजह है कि चांदी की कीमतों में 167 प्रतिशत की सालाना बढ़त देखने को मिली। यह सिर्फ सट्टा नहीं है। यह मांग और सप्लाई का सीधा खेल है। उत्पादन सीमित है, जबकि जरूरत बढ़ती जा रही है। ऊपर से अमेरिका में टैरिफ को लेकर अनिश्चितता ने कंपनियों को स्टॉक जमा करने पर मजबूर कर दिया है। नतीजा सामने है।एक और अहम पहलू है सेंट्रल बैंकों की भूमिका। चीन, रूस और कई अन्य देश अपने विदेशी मुद्रा भंडार में तेजी से सोना जोड़ रहे हैं। यह डॉलर पर निर्भरता कम करने की रणनीति है। जब सेंट्रल बैंक बाजार में बड़े खरीदार बन जाते हैं, तो कीमतें टिकाऊ तरीके से ऊपर जाती हैं। यही वजह है कि मौजूदा तेजी को हल्के में नहीं लिया जा सकता।

भारत के लिए यह स्थिति दोहरी चुनौती लेकर आती है। एक ओर निवेशकों को बेहतर रिटर्न मिल रहा है, दूसरी ओर आम उपभोक्ता पर महंगाई का बोझ बढ़ रहा है। शादी-ब्याह और त्योहारों के मौसम में सोना-चांदी की कीमतें आम आदमी की पहुंच से दूर होती जा रही हैं। यह सामाजिक और आर्थिक दोनों स्तरों पर चिंता का विषय है।यहां नीति निर्माताओं के लिए भी एक संदेश छिपा है। जब लोग बड़े पैमाने पर सोना खरीदते हैं, तो इसका मतलब है कि उन्हें वित्तीय बाजारों और भविष्य की आर्थिक स्थिरता पर पूरा भरोसा नहीं है। शेयर बाजार की ऊंचाई के बावजूद सोने की मांग बढ़ना इस असुरक्षा की ओर इशारा करता है।

निवेशकों के लिए भी यह दौर सतर्क रहने का है। सोना और चांदी सुरक्षित जरूर हैं, लेकिन हर तेजी हमेशा नहीं टिकती। भावनाओं में बहकर एकमुश्त निवेश करना जोखिम भरा हो सकता है। समझदारी इसी में है कि संतुलित पोर्टफोलियो रखा जाए और जरूरत के हिसाब से निवेश किया जाए।

आने वाले समय में अगर वैश्विक तनाव कम नहीं हुआ, ब्याज दरों में कटौती होती रही और ग्रीन टेक्नोलॉजी की मांग बढ़ती गई, तो सोना 1.50 लाख और चांदी 2.75 लाख के स्तर तक पहुंच सकती है। लेकिन अगर हालात बदले, तो उतार-चढ़ाव भी उतना ही तेज होगा।इसलिए सोना-चांदी की मौजूदा चमक को सिर्फ मुनाफे की कहानी के रूप में नहीं देखना चाहिए। यह दुनिया की बेचैनी, बदलती अर्थव्यवस्था और भविष्य की अनिश्चितता का संकेत है। जब धातुएं बोलने लगती हैं, तो समझ लेना चाहिए कि वक्त कुछ कह रहा है। सवाल सिर्फ इतना है कि हम उसे सुन रहे हैं या नहीं।

जुबानी तीर

“यह सिर्फ एक वीडियो का मामला नहीं है, यह करोड़ों सिखों की आस्था से जुड़ा सवाल है। अगर किसी जनप्रतिनिधि ने धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाई है तो उस पर कानून के मुताबिक सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। किसी को भी पद या पार्टी के नाम पर छूट नहीं दी जा सकती।

कपिल मिश्रा (भाजपा, मंत्री)

“आतिशी के बयान को जानबूझकर तोड़-मरोड़कर पेश किया गया है। यह एक राजनीतिक साजिश है, ताकि असली मुद्दों से ध्यान भटकाया जा सके। आम आदमी पार्टी किसी भी धर्म या गुरु का अपमान नहीं करती और न ही ऐसे किसी बयान का समर्थन करती है।

संजय सिंह (आम आदमी पार्टी, सांसद)

“धार्मिक आस्था से जुड़े विषयों पर बेहद संयम और जिम्मेदारी की जरूरत होती है। अगर किसी बयान या वीडियो से सिख समाज की भावनाएं आहत हुई हैं तो इसकी निष्पक्ष और पारदर्शी जांच होनी चाहिए। राजनीति के नाम पर किसी भी धर्म या गुरु का अपमान स्वीकार नहीं किया जा सकता।

विरेंद्र सचदेवा (दिल्ली भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित । संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

सफेद रोग और आयुर्वेद

कारण, दृष्टि और प्राकृतिक उपचार की समग्र समझ

सफेद रोग जिसे आम भाषा में चर्म रोग या ल्यूकोडर्मा कहा जाता है, आज केवल शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक और सामाजिक चिंता का विषय भी बन चुका है। त्वचा पर सफेद धब्बों का उभरना कई लोगों के आत्मविश्वास को प्रभावित करता है। आधुनिक चिकित्सा में इसके कई उपचार उपलब्ध हैं, लेकिन आयुर्वेद इसे केवल त्वचा की बीमारी नहीं मानता। आयुर्वेद के अनुसार यह रोग शरीर के भीतर असंतुलन का परिणाम है और इसका उपचार भी भीतर से ही किया जाता है।

आयुर्वेद में सफेद रोग की परिभाषा

आयुर्वेदिक ग्रंथों में सफेद रोग को श्वित्र या किलास कहा गया है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में इसका विस्तार से वर्णन मिलता है। आयुर्वेद मानता है कि जब शरीर में वात, पित्त और कफ दोषों का संतुलन बिगड़ता है और रक्त व त्वचा धातु दूषित होती है तब त्वचा पर रंगहीन धब्बे दिखाई देने लगते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार यह रोग संक्रामक नहीं है और न ही यह किसी एक कारण से होता है। यह लंबे समय तक गलत जीवनशैली, खानपान और मानसिक तनाव का परिणाम होता है।

सफेद रोग के प्रमुख कारण

आयुर्वेद सफेद रोग के कारणों को शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर देखता है।

गलत खानपान जैसे दूध के साथ नमक या खट्टे पदार्थों का सेवन, अत्यधिक तला भुना भोजन, फास्ट फूड और रासायनिक तत्वों से भरपूर आहार शरीर के दोषों को बढ़ाता है।

अत्यधिक मानसिक तनाव, भय, शोक और क्रोध भी इस रोग को बढ़ावा देते हैं।

नींद की कमी, दिन में सोने की आदत और अनियमित दिनचर्या भी शरीर की पाचन अग्नि को कमजोर करती है।

रक्त की अशुद्धि और यकृत की कमजोरी को भी सफेद रोग का बड़ा कारण माना गया है।

आयुर्वेदिक दृष्टि से रोग की प्रक्रिया

आयुर्वेद में माना जाता है कि जब पाचन अग्नि कमजोर होती है तो भोजन ठीक से पच नहीं पाता। इससे आम यानी विषैले तत्व शरीर में जमा होने लगते हैं। ये विष रक्त और त्वचा धातु को प्रभावित करते हैं। परिणामस्वरूप त्वचा में मेलानिन का निर्माण बाधित होता है और सफेद धब्बे उभरने लगते हैं।

इसलिए आयुर्वेद का उपचार केवल बाहरी लेप तक सीमित नहीं रहता बल्कि पाचन सुधारने, रक्त शुद्ध करने और दोष संतुलन पर केंद्रित होता है।

आयुर्वेदिक उपचार का मूल सिद्धांत

आयुर्वेद में सफेद रोग का इलाज तीन स्तरों पर किया जाता है।

पहला स्तर दोष शमन का होता है जिसमें शरीर के भीतर बढ़े हुए दोषों को संतुलित किया जाता है।

दूसरा स्तर रक्त और यकृत की शुद्धि का होता है।

तीसरा स्तर त्वचा को पुनर्जीवित करने और रंगत लौटाने का होता है।

यह प्रक्रिया समय लेती है लेकिन इसे स्थायी समाधान माना जाता है।

प्रमुख आयुर्वेदिक औषधियां

आयुर्वेद में कई जड़ी बूटियों का उल्लेख मिलता है जो सफेद रोग में उपयोगी मानी जाती हैं।

बाकुची को सफेद रोग की सबसे प्रभावी औषधि माना जाता है। यह त्वचा में मेलानिन निर्माण को सक्रिय करने में सहायक होती है। बाकुची का प्रयोग आंतरिक और बाहरी दोनों रूपों में किया जाता है।

नीम रक्त शुद्ध करने में सहायक है। यह त्वचा की सूजन और संक्रमण को भी कम करता है।

मंजीष्ठा त्वचा रोगों के लिए प्रसिद्ध औषधि है। यह रक्त को साफ करती है और त्वचा को स्वस्थ बनाती है।

हरिद्रा यानी हल्दी सूजन कम करने और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होती है।

गिलोय शरीर की प्रतिरक्षा को मजबूत करती है और विषैले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करती है।

इन औषधियों का प्रयोग हमेशा योग्य आयुर्वेदाचार्य की सलाह से ही किया जाना चाहिए।

पंचकर्म और शोधन चिकित्सा

आयुर्वेद में केवल औषधियों से ही नहीं बल्कि पंचकर्म उपचार से भी सफेद रोग का इलाज किया जाता है।

वमन और विरेचन के माध्यम से शरीर से दोषों को बाहर निकाला जाता है।

रक्तमोक्षण यानी नियंत्रित तरीके से रक्त शुद्धि भी कुछ मामलों में उपयोगी मानी जाती है।

पंचकर्म उपचार शरीर को भीतर से शुद्ध करता है और औषधियों के प्रभाव को बढ़ाता है।

आहार और जीवनशैली की भूमिका

आयुर्वेद मानता है कि बिना सही आहार और जीवनशैली के कोई भी उपचार पूरा नहीं हो सकता।

सफेद रोग में ताजा और सात्विक भोजन लेने की सलाह दी जाती है।

हरी सब्जियां, मौसमी फल, दालें और हल्का भोजन पाचन को बेहतर बनाते हैं।

दूध के साथ नमक या खट्टे पदार्थों से परहेज जरूरी माना गया है।

फास्ट फूड, डिब्बाबंद भोजन और अत्यधिक मसालेदार चीजों से बचना चाहिए।

योग और प्राणायाम मानसिक तनाव को कम करने में सहायक होते हैं। विशेष रूप से अनुलोम विलोम और भ्रामरी प्राणायाम लाभकारी माने जाते हैं।

मानसिक पक्ष भी है उतना ही जरूरी

आयुर्वेद शरीर और मन को अलग नहीं मानता। सफेद रोग से पीड़ित व्यक्ति अक्सर हीन भावना और तनाव से गुजरता है। यह तनाव रोग को और बढ़ा सकता है।

ध्यान, सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास बढ़ाने वाले अभ्यास उपचार का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

परिवार और समाज का सहयोग भी रोगी के मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।

समय और धैर्य की आवश्यकता

आयुर्वेदिक उपचार में सबसे महत्वपूर्ण तत्व धैर्य है। यह कोई त्वरित इलाज नहीं है। रोग की अवस्था, उम्र और जीवनशैली के अनुसार उपचार में समय लगता है।

नियमित उपचार, सही आहार और सकारात्मक दृष्टिकोण से धीरे धीरे सुधार दिखाई देता है।

सावधानी और संतुलन

यह समझना जरूरी है कि हर व्यक्ति का शरीर अलग होता है। इसलिए किसी एक नुस्खे को सभी पर समान रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

स्वयं दवा लेने या इंटरनेट पर बताए गए उपायों को बिना सलाह अपनाने से नुकसान हो सकता है।

आयुर्वेदिक उपचार हमेशा अनुभवी चिकित्सक की निगरानी में ही करना चाहिए।

सफेद रोग कोई अभिशाप नहीं है और न ही यह लाइलाज है। आयुर्वेद इसे शरीर के भीतर असंतुलन का संकेत मानता है और उसी के अनुसार समग्र उपचार की राह दिखाता है।औषधि, आहार, जीवनशैली और मानसिक संतुलन के माध्यम से आयुर्वेद सफेद रोग के प्रबंधन में एक प्रभावी और प्राकृतिक विकल्प प्रस्तुत करता है।जरूरत है सही जानकारी, धैर्य और विश्वास की। क्योंकि जब इलाज भीतर से शुरू होता है, तब उसका असर बाहर भी दिखाई देता है।

संत वारिस अली शाह दिव्य प्रेम की सजीव प्रतिमूर्ति

परिचय

परमात्मा के दिव्य प्रेम में डूबे हुए मस्त सूफी संत वारिस अली शाह की अमृतमयी कृपा ऐसी है कि उसमें स्नान करने से जन्म-जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। साथ ही, पवित्र हृदय में भगवान का निर्मल रस उमड़ पड़ता है और आत्मा सहज ही परमात्मा के प्रेम में रम जाती है। यह दिव्य प्रेमोन्माद भगवान के साक्षात्कार की ओर ले जाता है। लगभग डेढ़ सौ साल पहले, जब संत वारिस अली शाह ने प्रेमरस की सरिता बहाई, तो उत्तर भारत की संत साहित्य परंपरा को असाधारण योग मिला। उस समय भारत में राजनीतिक उथल-पुथल चरम पर थी। केंद्रीय सत्ता कमजोर हो चुकी थी, मुगलों के वंशजों से शासन छीनने के लिए अंग्रेज कंपनी के प्रतिनिधि चक्र रच रहे थे। मराठे और राजपूत अपनी शक्ति स्थापित करने में लगे थे, जबकि लखनऊ के नवाबों पर विलासिता का आरोप लगाकर अंग्रेज अवध पर कब्जा करने के सपने देख रहे थे। लेकिन इस राजनीतिक अराजकता के बीच संतमत का मीठा झरना कलकल बहता रहा। सज्जन लोग राम-रहीम के पवित्र नामों का उच्चारण कर समाज के कल्याण में जुटे थे। ऐसे संतों में सूफी संत वारिस अली शाह को अमिट महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। दयानिधि वारिस अली शाह ने अपनी पवित्र प्रेममयी वाणी से कलियुग के सताए असंख्य जीवों की रक्षा की और उन्हें सत्पथ पर लगाया। संतमत के उद्गम में उनकी उपस्थिति का ऐतिहासिक महत्व भी अमिट है। उनकी दृष्टि में हिंदू-मुसलमान ही नहीं, समस्त प्राणी एक ही प्रेममय परमात्मा की संतान हैं।

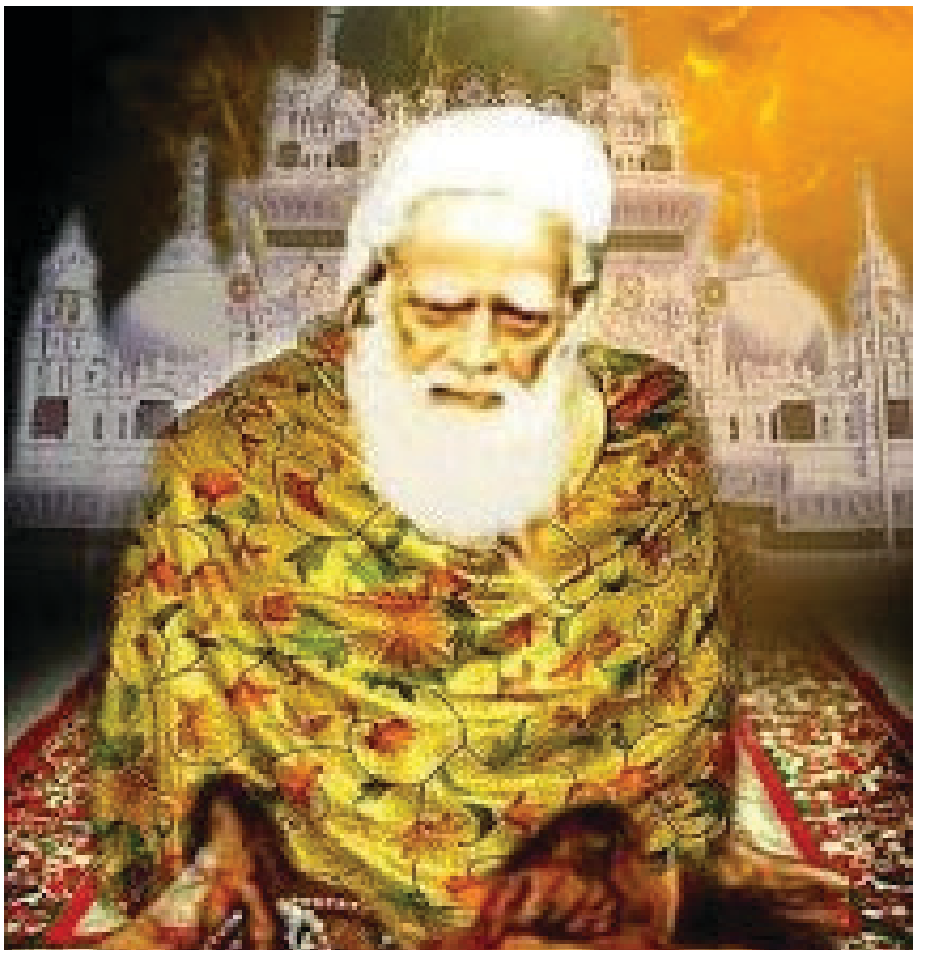

जन्म और बचपन

उत्तर भारत के अवध क्षेत्र में बाराबंकी जनपद के प्राचीन और ऐतिहासिक ग्राम देवा में, प्रसिद्ध पवित्र सैयद कुल में संवत 1979 विक्रमी में संत वारिस अली शाह ने जन्म लिया। उनके पिता कुरबान अली बड़े ही शिक्षित, शिष्ट और उच्च विचारों के महापुरुष थे। उनकी शिक्षा बगदाद नगर में हुई थी। उन्होंने अपने पुत्र को बड़े प्रेम से पालना शुरू किया, लेकिन अचानक काल ने उन पर आक्रमण कर दिया। वारिस अली अभी केवल 3 साल के थे, जब उनके पिता कुरबान अली चल बसे। और दैव का विधान ऐसा था कि मां भी उसी साल उन्हें छोड़कर मौत का आलिंगन कर लिया। उच्च कोटि के संतों के जीवन में ऐसी घटनाएं होती रहती हैं। यदि परमात्मा की ओर से ऐसे विधान न हों, तो वे संतरूप में अभिव्यक्त ही नहीं हो सकते। दिव्य विभूतियों के प्रत्येक कार्य दिव्य और अलौकिक होते हैं। वारिस अली ने बचपन में 5 साल से 7 साल तक की अवधि में सम्पूर्ण कुरान कंठस्थ कर डाला। कितनी विलक्षण बात है यह। आध्यात्मिक बातों में उनका मन बहुत लगता था। अन्य बातों और विषयों में उनकी लेशमात्र भी रुचि नहीं थी। सांसारिकता तो उनका स्पर्श नहीं कर सकी थी। वे सदा एकांत में बैठकर कुछ-न-कुछ सोचते रहते थे। एक दिन तो लोग उन्हें न पाकर बहुत चिंतित हो उठे। खोज होने लगी। वे निकटस्थ एक सघन जंगल में बैठकर एकांत में मनन कर रहे थे। लोग उन्हें इतनी अल्प अवस्था में ऐसी स्थिति में देखकर आश्चर्यचकित हो गए। उन दिनों उनके निकट के संबंधी खादिम अली शाह ने, जो उच्च कोटि के सूफी थे, उनकी शिक्षा-दीक्षा का भार संभाला।

आध्यात्मिक दीक्षा और प्रेम का उदय

वारिस अली शाह जब 11 साल के हुए, तो उन्हें सूफी मत में विधिपूर्वक दीक्षित कर लिया गया। 14 साल की अवस्था में वे परमात्मा के प्रेम में पूर्ण रूप से रंग उठे। धीरे-धीरे उनके प्रेम-प्रवचन सुनने के लिए अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी। उन्होंने अपनी संपत्ति का अधिकांश हिस्सा दरिद्र नारायण की सेवा में दान कर दिया। शेष अपने संबंधियों में वितरित कर दिया। पुस्तकालय भी संबंधी को दे दिया। और 15 साल की अवस्था में विदेश भ्रमण के लिए निकल पड़े। उनका जीवन पहले से ही तप से परिपूर्ण था। तीन दिनों के बाद एक बार भोजन किया करते थे। उन्होंने मक्का की तीर्थयात्रा की। वे 12 साल तक अरब, सीरिया, फिलस्तीन, मेसोपोटामिया, फारस, तुर्की, रूस, जर्मनी आदि में भ्रमण करते रहे। इस यात्राकाल में उन्होंने 10 बार हज किया। विदेशों में एक पवित्र हृदय के दरवेश के नाते उन्हें अमिट सम्मान मिला। जर्मनी के सबसे बड़े तत्कालीन महापुरुष बिस्मार्क ने उनकी बड़ी आवभगत की। असंख्य लोग उनके शिष्य और अनुयायी हो गए।

घर वापसी और आगे की यात्राएं

घर वापस आने पर लोग उन्हें पहचान न सके। संत वारिस अली शाह ने देखा कि उनका घर नष्टप्राय सा हो गया है। संसार की निर्ममता पर उन्हें तनिक भी आश्चर्य न हुआ। किसी ने उनका स्वागत-सत्कार भी नहीं किया। इस समय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम चल रहा था। वारिस अली शाह देवा से संवत 1914 विक्रमी में लखनऊ आए। उन्होंने फिर विश्व-भ्रमण आरंभ किया। संवत 1956 विक्रमी में शिष्यों की विशेष प्रार्थना से वे देवा आए और आजीवन सूफी सिद्धांतों की व्याख्या करते हुए अपनी जन्मभूमि में ही रह गए।

जीवन शैली और तपस्या

शाह साहब ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत निभाया। सदा परमात्मा के सरस और प्रेममय चिंतन में आत्मविभोर रहते थे। वे उच्चकोटि के मितभाषी थे। विशेष आवश्यकता के समय दूसरों के हित के लिए कुछ मीठे वचन कभी-कभी बोल दिया करते थे। वे बाहर-भीतर समान थे। उनकी कथनी-करनी एक-सी थी। देखने में बड़े सुंदर थे, पर सदा आंखें नीची कर प्रभु का चिंतन किया करते थे। भूमि पर ही शयन करते थे, तकिया नहीं लगाते थे। रात में बहुत कम सोते थे। किसी ने उन्हें कभी सोते देखा ही नहीं था। उनका सम्पूर्ण जीवन संयमित था। शाह साहब ने 15 से 40 साल की अवस्था तक सदा सात दिनों के बाद एक बार भोजन किया करते थे। उनका अंतःकरण ईश्वरीय प्रेम से परिपूर्ण था। वे इसी दिव्य प्रेम की व्याप्ति समस्त प्राणीमात्र में देखना चाहते थे। प्रेम के रंग में विश्व को रंग देना उनका सिद्धांत था। वे कहा करते थे कि भगवत प्रेम ही सार्वभौमिक है। शाह साहब सूफी मत के कादरी और चिश्ती सिद्धांत के प्रचारक थे। उन्होंने संसार को दिव्य प्रेम का दान किया। शाह साहब ने कहा कि ईश्वर सर्वत्र है। काबा, मस्जिद, मंदिर और गिरजाघरों में एक ही ईश्वर व्याप्त है। उसका एक क्षण के लिए भी विस्मरण नहीं होना चाहिए। वे प्रेम के अधीन हैं, प्रेम में हैं, उनका निवास है। उन्होंने ईश्वर में अक्षुण्ण विश्वास रखने की सीख दी। पूर्ण समर्पण का मार्ग बताया। उन्होंने कहा कि ईश्वर में पूर्ण विश्वास हो जाने पर संसार के किसी भी पदार्थ की प्राप्ति की चिंता नहीं रह जाती है।

धार्मिक आस्था और प्रेम दर्शन

शाह वारिस अली की इस्लाम धर्म में सुदृढ़ आस्था थी। उन्होंने मक्का की भारत से 7 बार यात्रा की थी। और सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि 7 बार में 3 बार वे भारत से मक्का तक पैदल गए थे। संत वारिस अली शाह प्रेमधर्मी दरवेश थे। उनका विश्वास था कि परमात्मा के प्रति प्रेम उनसे एकात्म भाव है। उन्होंने भगवत प्रेम के माध्यम से आत्मसाक्षात्कार किया। उनका जीवन परमात्मा के प्रेम के चरणों में पूर्ण शरणागत था। उनकी धारणा थी कि भगवत प्रेम की प्राप्ति अपने प्रयत्न से कदापि संभव नहीं है। यह तो सहज है और आध्यात्मिक विकास का फल है। शाह साहब ने एक बार कहा था कि परमात्मा का सिंहासन केवल आसमान में ही नहीं है, उसका अन्वेषण अपने हृदय में करना चाहिए।

समर्पण और विरासत

शाह साहब के पास भगवत प्रेम को छोड़कर अपनी कहलाने वाली वस्तु कुछ भी नहीं थी। उन्होंने अपनी संपत्ति का वितरण गरीब और असहायों में कर दिया था। वे अपने शिष्यों को बहुत मानते और चाहते थे। उनकी उक्ति है कि मेरे शिष्य मेरे पुत्र के समान हैं, उन्हें भाई-भाई की तरह रहना चाहिए। 70 साल की अवस्था में संवत 1962 विक्रमी (17 अप्रैल सन् 1905 ईस्वी) में उन्होंने देवा में ही परमात्मैक्य प्राप्त किया। देवा में उनकी समाधि असंख्य प्राणियों की श्रद्धा की प्रतीक है। निस्संदेह शाह वारिस अली भगवत प्रेम की सजीव प्रतिमा थे। अपने समय की दिव्य प्रेममयी आध्यात्मिक शक्ति थे।

रचनाएं

संत वारिस अली शाह के वचन ही उनकी अमर कृति के रूप में सुरक्षित हैं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

सोना-चांदी रिकॉर्ड ऊंचाई पर

क्यों आसमान छू रहे हैं दाम और आगे क्या महंगा होगा निवेश

@ शोभित यादव

12 जनवरी का दिन सर्राफा बाजार के लिए ऐतिहासिक बन गया। सोने और चांदी दोनों के दाम ऑल टाइम हाई पर पहुंच गए। निवेशकों से लेकर आम खरीदार तक, हर कोई एक ही सवाल पूछता नजर आया। आखिर कीमतें इतनी तेजी से क्यों बढ़ रही हैं और क्या यह रफ्तार आगे भी जारी रहेगी?इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (IBJA) के ताजा आंकड़ों ने बाजार की तस्वीर साफ कर दी है।

सोना पहली बार 1.40 लाख के पार

IBJA के मुताबिक 24 कैरेट सोने की कीमत में एक ही दिन में 3,327 रुपए की जोरदार तेजी आई। इसके साथ ही 10 ग्राम सोना 1,40,449 रुपए पर बंद हुआ। एक दिन पहले यानी 11 जनवरी को यही सोना 1,37,122 रुपए प्रति 10 ग्राम था। यह पहली बार है जब सोने ने 1.40 लाख का आंकड़ा पार किया है। सर्राफा बाजार के जानकार इसे सिर्फ भाव बढ़ने की खबर नहीं, बल्कि निवेश के ट्रेंड में बड़े बदलाव का संकेत मान रहे हैं।

चांदी ने भी बनाया नया रिकॉर्ड

सोने के साथ-साथ चांदी ने भी नया इतिहास रच दिया। एक किलो चांदी सुबह के कारोबार में 2,57,283 रुपए तक पहुंच गई थी। हालांकि दिन के अंत तक इसमें हल्की गिरावट आई और यह 13,968 रुपए की तेजी के साथ 2,56,776 रुपए प्रति किलो पर बंद हुई।इससे पहले चांदी का भाव 2,42,808 रुपए किलो था। यानी एक ही दिन में चांदी निवेशकों को मोटा मुनाफा दे गई।

शहरों में रेट अलग क्यों दिखते हैं

अक्सर लोगों के मन में यह सवाल उठता है कि IBJA के रेट और शहरों के ज्वेलर्स के रेट अलग क्यों होते हैं।दरअसल, IBJA द्वारा जारी की जाने वाली कीमतों में 3 प्रतिशत GST, मेकिंग चार्ज और ज्वेलर्स का मार्जिन शामिल नहीं होता। यही वजह है कि दिल्ली, मुंबई, जयपुर या चेन्नई में सोने-चांदी के रेट अलग-अलग नजर आते हैं।IBJA के रेट का इस्तेमाल रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI) सोवरेन गोल्ड बॉन्ड की कीमत तय करने में करता है। इसके अलावा कई बैंक इन्हीं रेट्स के आधार पर गोल्ड लोन की वैल्यू तय करते हैं।

2025 में सोना-चांदी ने किया निवेशकों को मालामाल

पिछला साल यानी 2025 सोने और चांदी दोनों के लिए बेहद शानदार रहा।सोने की बात करें तो पूरे साल में इसकी कीमत 57,033 रुपए यानी करीब 75 प्रतिशत बढ़ी।31 दिसंबर 2024 को 10 ग्राम 24 कैरेट सोना 76,162 रुपए का था। वहीं 31 दिसंबर 2025 को यही सोना 1,33,195 रुपए पर पहुंच गया।

चांदी ने तो सोने से भी ज्यादा तेज रफ्तार दिखाई। 2025 में चांदी का भाव 1,44,403 रुपए यानी 167 प्रतिशत बढ़ गया।31 दिसंबर 2024 को एक किलो चांदी की कीमत 86,017 रुपए थी, जो साल के आखिरी दिन 2,30,420 रुपए प्रति किलो हो गई।

सोने में तेजी के 3 बड़े कारण

1. डॉलर की कमजोरी

अमेरिका में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद से डॉलर कमजोर हुआ है। जब डॉलर कमजोर होता है, तो सोने की होल्डिंग कॉस्ट कम हो जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि निवेशक बड़ी मात्रा में सोना खरीदने लगते हैं।

2. वैश्विक तनाव का माहौल

रूस-यूक्रेन युद्ध, मिडिल ईस्ट में तनाव और दुनिया के कई हिस्सों में अस्थिरता ने निवेशकों को सुरक्षित विकल्प की तलाश में डाल दिया है। ऐसे हालात में सोना हमेशा से सबसे भरोसेमंद निवेश माना जाता है।

3. सेंट्रल बैंकों की खरीदारी

चीन समेत कई देश अपने रिजर्व बैंक में तेजी से सोना जोड़ रहे हैं। अनुमान है कि सेंट्रल बैंक सालभर में 900 टन से ज्यादा सोने की खरीदारी कर रहे हैं। इतनी बड़ी मांग से कीमतों पर दबाव बनना स्वाभाविक है।

चांदी क्यों भाग रही है सोने से भी तेज

1. इंडस्ट्रियल डिमांड में उछाल

चांदी अब सिर्फ ज्वेलरी तक सीमित नहीं रह गई है। सोलर पैनल, इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रिक व्हीकल्स में इसका इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। चांदी अब एक जरूरी औद्योगिक कच्चा माल बन चुकी है।

2. ट्रंप के टैरिफ का डर

अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ फैसलों को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। इस डर से अमेरिकी कंपनियां चांदी का भारी स्टॉक जमा कर रही हैं। ग्लोबल सप्लाई घटने से कीमतों में तेजी आई है।

3. मैन्युफैक्चरर्स की होड़

उत्पादन बाधित होने के डर से मैन्युफैक्चरर पहले से ज्यादा चांदी खरीद रहे हैं। इसी वजह से बाजार में डिमांड सप्लाई से आगे निकल गई है और दाम लगातार ऊपर जा रहे हैं।

आगे और महंगा हो सकता है सोना-चांदी

बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि फिलहाल तेजी थमने के आसार कम हैं।केडिया एडवाइजरी के डायरेक्टर अजय केडिया के मुताबिक, चांदी की डिमांड अभी भी मजबूत बनी हुई है। उनका अनुमान है कि इस साल चांदी 2.75 लाख रुपए प्रति किलो तक जा सकती है।सोने को लेकर भी उनका कहना है कि सुरक्षित निवेश की मांग बनी हुई है। अगर यही ट्रेंड रहा तो साल के आखिर तक सोना 1.50 लाख रुपए प्रति 10 ग्राम का स्तर पार कर सकता है।तेजी के इस दौर में आम खरीदार असमंजस में है। शादी-ब्याह और त्योहारों के लिए खरीदारी करने वालों पर महंगाई का सीधा असर पड़ रहा है।जानकारों की सलाह है कि जरूरत के हिसाब से ही खरीदारी करें और एकमुश्त बड़ा निवेश करने से पहले बाजार की चाल समझें।

असली चांदी पहचानने के 4 आसान तरीके

तेजी के दौर में नकली चांदी का खतरा भी बढ़ जाता है। ऐसे में कुछ आसान टेस्ट काम आ सकते हैं।

मैग्नेट टेस्ट

असली चांदी चुंबक से नहीं चिपकती। अगर चिपक जाए तो समझिए कुछ गड़बड़ है।

आइस टेस्ट

चांदी पर बर्फ रखें। असली चांदी पर बर्फ बहुत तेजी से पिघलती है।

स्मेल टेस्ट

असली चांदी में कोई गंध नहीं होती। नकली चांदी में तांबे जैसी गंध आ सकती है।

क्लॉथ टेस्ट

चांदी को सफेद कपड़े से रगड़ें। अगर काला निशान पड़ता है तो चांदी असली होने की संभावना ज्यादा होती है।

अपरा से संभव नहीं है परा का ज्ञान

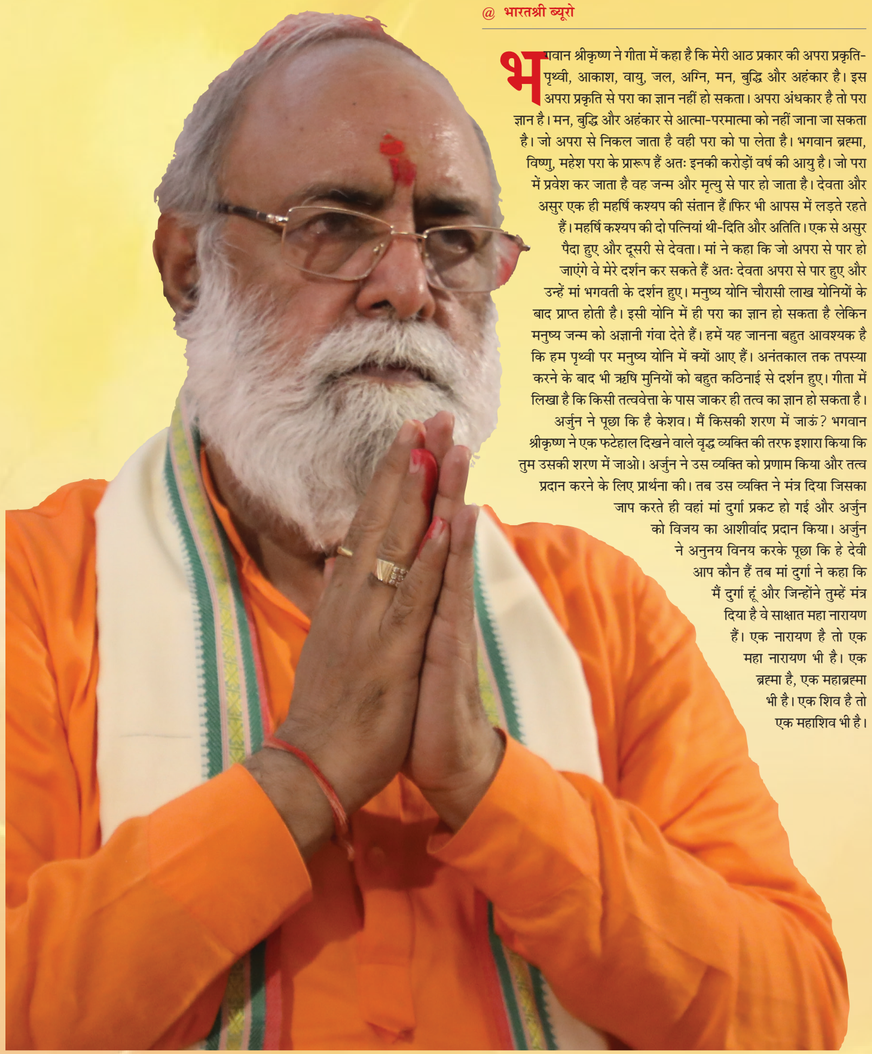

@ भारतश्री ब्यूरो

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि मेरी आठ प्रकार की अपरा प्रकृति- पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, मन, बुद्धि और अहंकार है। इस अपरा प्रकृति से परा का ज्ञान नहीं हो सकता। अपरा अंधकार है तो परा ज्ञान है। मन, बुद्धि और अहंकार से आत्मा-परमात्मा को नहीं जाना जा सकता है। जो अपरा से निकल जाता है वही परा को पा लेता है। भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश परा के प्रारूप हैं अतः इनकी करोड़ों वर्ष की आयु है। जो परा में प्रवेश कर जाता है वह जन्म और मृत्यु से पार हो जाता है। देवता और असुर एक ही महर्षि कश्यप की संतान हैं फिर भी आपस में लड़ते रहते हैं। महर्षि कश्यप की दो पत्नियां थी-दिति और अतिति। एक से असुर पैदा हुए और दूसरी से देवता। मां ने कहा कि जो अपरा से पार हो जाएंगे वे मेरे दर्शन कर सकते हैं अतः देवता अपरा से पार हुए और उन्हें मां भगवती के दर्शन हुए। मनुष्य योनि चौरासी लाख योनियों के बाद प्राप्त होती है। इसी योनि में ही परा का ज्ञान हो सकता है लेकिन मनुष्य जन्म को अज्ञानी गंवा देते हैं। हमें यह जानना बहुत आवश्यक है कि हम पृथ्वी पर मनुष्य योनि में क्यों आए हैं। अनंतकाल तक तपस्या करने के बाद भी ऋषि मुनियों को बहुत कठिनाई से दर्शन हुए। गीता में लिखा है कि किसी तत्ववेत्ता के पास जाकर ही तत्व का ज्ञान हो सकता है। अर्जुन ने पूछा कि है केशव। मैं किसकी शरण में जाऊं? भगवान श्रीकृष्ण ने एक फटेहाल दिखने वाले वृद्ध व्यक्ति की तरफ इशारा किया कि तुम उसकी शरण में जाओ। अर्जुन ने उस व्यक्ति को प्रणाम किया और तत्व प्रदान करने के लिए प्रार्थना की। तब उस व्यक्ति ने मंत्र दिया जिसका जाप करते ही वहां मां दुर्गा प्रकट हो गई और अर्जुन को विजय का आशीर्वाद प्रदान किया। अर्जुन ने अनुनय विनय करके पूछा कि हे देवी आप कौन हैं तब मां दुर्गा ने कहा कि मैं दुर्गा हूं और जिन्होंने तुम्हें मंत्र दिया है वे साक्षात महा नारायण हैं। एक नारायण है तो एक महा नारायण भी है। एक ब्रह्मा है, एक महाब्रह्मा भी है। एक शिव है तो एक महाशिव भी है।

मां दुर्गा ने किया देवताओं का मान मर्दन

एक बार देवी मां दुर्गा ने देवताओं से कहा कि तुम क्या करते हो और तुम्हारी क्या शक्ति है? तब सभी देवता अपनी शक्तियों का बखान करने लगे। तब मां भगवती दुर्गा ने कहा कि चलो मैं तुम सबकी परीक्षा लेती हूं। मां ने एक तिनका पृथ्वी पर फेंक दिया और देवताओं से कहा कि तुम इसे हिला कर दिखाओ। पवन देव ने प्रबल वायु के झोंकों को आदेश दिया लेकिन तिनका अपने स्थान नहीं हिला। उसके बाद वरुण देव ने पानी के सैलाब को आदेश दिया लेकिन तिनका फिर भी अपने स्थान पर बना रहा। अग्नि देव ने उस तिनके को जलाने का नि आदेश दिया लेकिन आग कुछ भी न कर सकी। इस प्रकार सभी देवताओं ने अपनी तरफ से प्रयास किया लेकिन तिनका अपने स्थान से टस से मस नहीं हुआ। जब सबका मान मर्दन हो गया तब सभी त्राहि माम-त्राहि माम करते हुए मां की शरणागत हो गए। मां दुर्गा ने उन सभी को क्षमा करके आशीर्वाद प्रदान किया और वे सभी अपने-अपने लोक को प्रस्थान कर गए।

अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है

रावण जैसे महा प्रतापी ज्ञानी और विद्वान को अहंकार ही ग्रस गया। मनुष्य में कर्ताभाव कभी नहीं आना चाहिए। गुरुद्वारे में जब अरदास होती है तो वर्णन आता है तो वर्णन आता है-प्रथम भगवती सिमर के...। मां का कथन है कि मैं एक ओंकार हूं, सतनाम हूं, कर्ता पुरख हूं। जो जगत में दिखाई दे रहा है उसे मैंने पैदा किया है। तुम यह मान लेते हो कि मैंने किया है, मैं राष्ट्रपति हूं, मैं प्रधानमंत्री हूं, मैंने फलां-फलां काम किया है। मैंने ग्रंथ पढ़ लिए हैं लेकिन ग्रंथ से भी बड़ा महा ग्रंथ है। मां एक पल में ही सैकड़ों पृथ्वियों का निर्माण कर देती है और नष्ट भी कर देती है।

आयुर्वेद का अंग है दैवव्यपाश्रय

आयुर्वेद के आठ अंग हैं। इनमें दैवव्यपाश्रय का वर्णन है। जिसके बारे में प्रोफेसरों और डाक्टरों को ज्ञान नहीं है। जब पृथ्वी पर वायरल, बैक्टीरिया और फंगल तथा क्षुद्र किर्मियों के रोगों व कुष्ठ रोग आदि भयंकर रूप से पनपने लगे और इनके द्वारा भयंकर प्रहारों से लोग अकाल मृत्यु को प्राप्त होने लगे तब मां दुर्गा ने दैवव्यपाश्रय का प्रारूप भगवान ब्रह्मा जी को प्रदान किया। इस प्रकार आयुर्वेद की रचना हुई। आयुर्वेद के द्वारा सुश्रुत, चरक जैसे महा चिकित्सकों ने इसे ग्रहण किया और योग्य पात्रों को प्रदान किया। लेकिन फिर भी इस दैवव्यपाश्रय से बड़े-बड़े

चिकित्सक, बड़े-बड़े आयुर्वेदाचार्य आज भी अनभिज्ञ हैं। जिस रोग का समाधान किसी भी चिकित्सा प्रणाली से नहीं होता, वह दैवव्यपाश्रय से संभव हो जाता है। अकाल मृत्यु टल जाती है तथा आयु भी बढ़ जाती है।

भगवान श्रीराम ने भी की मां दुर्गा की पूजा

भगवान श्रीराम का रावण से भीषण युद्ध हुआ। तब भगवान श्री राम ने मां दुर्गा की स्तुति की तथा हवन और पूजा कर के मां को प्रसन्न किया और वे रावण पर विजय प्राप्त कर सके।

इतना ही नहीं, दुनिया भर के डाक्टर और वैज्ञानिक यह सोचते हैं कि जिन बैक्टीरिया, वायरल और फंगल को कम नष्ट नहीं कर पा रहे हैं वह भारत का एक छोटा सा संत निवारण कर रहा है। मुझे संसद में 80 बार बुलाया। मुझसे यह भी कहा कि तुम भारत को छोड़कर हमारे देश में आ जाओ। मैंने कहा कि मैं सनातन धर्म और सनातन संस्कृति को नहीं छोड़ सकता। सनातन का अर्थ है जो आदि-अनादि काल से हैं अर्थात कुंभकार। ईश्वर कहता है मैं कुंभकार हूं, मैं धर्म हूं, मैं ज्ञान हूं और अज्ञान भी हूं। मां कहती है कि मैं मुक्ति की दाती हूं। सुख देना मेरे हाथ में है, जन्म-मरण मेरे हाथ में है। मैं परा हूं। अपरा से बने शरीर को धारण करने वाला गुरु नहीं होता क्योंकि गुरु परा होता है। अतः परा की शरण में जाओ, मां दुर्गा की शरण में जाओ।

टैरिफ तनाव के बाद नई शुरुआत

पैक्स सिलिका से भारत-अमेरिका रिश्तों में क्यों खुल रहा है भरोसे का नया अध्याय

@ मनीष पांडेय

टैरिफ को लेकर हाल के महीनों में भारत और अमेरिका के रिश्तों में तल्खी दिखाई दी थी। व्यापारिक मोर्चे पर खींचतान इतनी बढ़ गई कि दोनों देशों के रणनीतिक सहयोग पर भी सवाल उठने लगे। लेकिन अब इसी माहौल के बीच भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर के एक बयान ने तस्वीर बदल दी है। गोर ने ऐलान किया है कि भारत को अमेरिका की अगुवाई वाली रणनीतिक पहल पैक्स सिलिका में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। यह सिर्फ एक कूटनीतिक बयान नहीं है। इसे भारत-अमेरिका संबंधों में आई ठंडक के बाद एक नई सकारात्मक शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है। सवाल यह है कि आखिर 'पैक्स सिलिका' क्या है और भारत के लिए इसका महत्व क्यों इतना बड़ा माना जा रहा है।

टैरिफ विवाद और रिश्तों में आई खटास

बीते कुछ समय से भारत और अमेरिका के बीच टैरिफ को लेकर मतभेद खुलकर सामने आए। कुछ रणनीतिक कच्चे माल और तकनीकी उत्पादों पर शुल्क बढ़ाने के फैसलों ने दोनों देशों को आमने-सामने ला खड़ा किया। इसी दौरान अमेरिका ने सिलिकॉन और सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन से जुड़े देशों की अपनी अहम सूची से भारत को बाहर कर दिया था। इस कदम को भारत में एक सख्त संदेश के तौर पर देखा गया। माना गया कि व्यापारिक असहमति अब रणनीतिक सहयोग को भी प्रभावित कर रही है। ऐसे माहौल में भारत को 'पैक्स सिलिका' में शामिल करने की घोषणा ने साफ कर दिया कि वाशिंगटन अब रिश्तों को फिर से संतुलित करना चाहता है।

अमेरिकी राजदूत का बयान और बदला सुर

अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर का बयान इस पूरे घटनाक्रम में अहम माना जा रहा है। उन्होंने कहा कि वाशिंगटन के लिए कोई भी देश भारत जितना महत्वपूर्ण नहीं है। उनके शब्दों में, सच्चे दोस्त असहमत हो सकते हैं, लेकिन अंत में अपने मतभेद सुलझा लेते हैं।गोर ने यह भी स्पष्ट किया कि भारत और अमेरिका व्यापार समझौते को मजबूत करने के लिए सक्रिय बातचीत कर रहे हैं। इसी क्रम में उन्होंने घोषणा की कि भारत को अगले महीने 'पैक्स सिलिका' समूह में पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल होने का निमंत्रण दिया जाएगा।यह बयान अपने आप में यह स्वीकारोक्ति है कि अमेरिका भारत की रणनीतिक और तकनीकी ताकत को नजरअंदाज नहीं कर सकता।

क्या है पैक्स सिलिका?

'पैक्स सिलिका' अमेरिका की अगुवाई में बना देशों का एक रणनीतिक समूह है। इसका मुख्य उद्देश्य सिलिकॉन, सेमीकंडक्टर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग से जुड़ी सप्लाई चेन को सुरक्षित और भरोसेमंद बनाना है।आज की दुनिया में माइक्रोचिप्स और एआई वही भूमिका निभा रहे हैं, जो कभी तेल निभाता था। स्मार्टफोन से लेकर मिसाइल सिस्टम तक, हर आधुनिक तकनीक इन पर निर्भर है। ऐसे में इनकी सप्लाई चेन पर नियंत्रण सीधे तौर पर वैश्विक शक्ति संतुलन को प्रभावित करता है।

चीन की चुनौती और अमेरिकी रणनीति

इस पूरी पहल की पृष्ठभूमि में चीन की बढ़ती तकनीकी ताकत है। फिलहाल सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग और क्रिटिकल मिनरल्स की सप्लाई में चीन की बड़ी हिस्सेदारी है। अमेरिका और उसके सहयोगी देशों को डर है कि भविष्य की तकनीक पर चीन का एकाधिकार रणनीतिक जोखिम बन सकता है।'पैक्स सिलिका' को इसी चुनौती के जवाब के तौर पर देखा जा रहा है। इसका मकसद चीन पर निर्भरता कम करना और मित्र देशों के बीच वैकल्पिक सप्लाई चेन खड़ी करना है। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के अनुसार, इस पहल का उद्देश्य दबावयुक्त निर्भरता को कम करना और यह सुनिश्चित करना है कि सहयोगी देश मिलकर परिवर्तनकारी तकनीकों का विकास कर सकें।

कौन-कौन से देश हैं शामिल

'पैक्स सिलिका' कोई खुला मंच नहीं है। इसमें वही देश शामिल किए गए हैं जो लोकतांत्रिक मूल्यों को साझा करते हैं और एडवांस्ड टेक्नोलॉजी मैन्युफैक्चरिंग में सक्षम हैं।फिलहाल इस समूह में अमेरिका के अलावा जापान, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, नीदरलैंड, ब्रिटेन, इज़राइल, संयुक्त अरब अमीरात और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं। ये सभी देश सेमीकंडक्टर, चिप डिजाइन, मशीनरी या टेक्नोलॉजी के किसी न किसी अहम हिस्से में अग्रणी हैं।भारत को पहले इस सूची से बाहर रखा गया था। लेकिन अब उसे शामिल करने का फैसला यह दिखाता है कि अमेरिका भारत की तकनीकी क्षमता और बढ़ते प्रभाव को मान चुका है।

भारत की वापसी क्यों जरूरी थी

भारत आज दुनिया के उन गिने-चुने देशों में है जहां टेक्नोलॉजी, मैन्युफैक्चरिंग और बाजार तीनों मौजूद हैं। एक तरफ विशाल घरेलू बाजार है, दूसरी तरफ इंजीनियरिंग और आईटी टैलेंट की कोई कमी नहीं। अमेरिका यह भी समझता है कि भविष्य की सप्लाई चेन केवल भरोसेमंद साझेदारों के साथ ही बनाई जा सकती है। ऐसे में भारत को लंबे समय तक नजरअंदाज करना व्यावहारिक नहीं था।

भारत के लिए रणनीतिक महत्व

'पैक्स सिलिका' में शामिल होना भारत के लिए कई मायनों में बड़ा कदम है। सबसे पहला फायदा यह होगा कि भारत को ग्लोबल चिप हब के रूप में उभरने का मौका मिलेगा। इस समूह का हिस्सा बनते ही अमेरिका, जापान और दक्षिण कोरिया की बड़ी सेमीकंडक्टर कंपनियों के भारत में निवेश का रास्ता खुलेगा। 'फैब्स' यानी चिप बनाने के कारखाने और बड़े डेटा सेंटर स्थापित किए जा सकेंगे। इसके साथ ही टेक्नोलॉजी ट्रांसफर भी होगा, जो अब तक सबसे बड़ी चुनौती रही है।

रक्षा और अंतरिक्ष को मिलेगी मजबूती

आज की रक्षा तकनीक सुरक्षित चिप्स और एआई के बिना अधूरी है। मिसाइल सिस्टम, ड्रोन, सैटेलाइट और साइबर डिफेंस सभी अत्याधुनिक माइक्रोचिप्स पर निर्भर हैं।'पैक्स सिलिका' का हिस्सा बनने से भारत को रक्षा और अंतरिक्ष क्षेत्र में भी मजबूती मिलेगी। सुरक्षित और भरोसेमंद सप्लाई चेन के जरिए भारत अपनी सैन्य तकनीक को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकेगा। इससे रणनीतिक आत्मनिर्भरता भी बढ़ेगी।

आर्थिक और रोजगार के नए अवसर

सेमीकंडक्टर और एआई उद्योग केवल तकनीकी नहीं, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी बेहद अहम है। अगर भारत इस क्षेत्र में बड़ा खिलाड़ी बनता है, तो लाखों नए रोजगार पैदा हो सकते हैं। मैन्युफैक्चरिंग से लेकर रिसर्च और डिजाइन तक, हर स्तर पर भारतीय युवाओं को मौके मिलेंगे। यह 'मेक इन इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' जैसे अभियानों को भी नई गति देगा।

कूटनीतिक संदेश भी साफ

भारत को 'पैक्स सिलिका' में शामिल करना सिर्फ तकनीकी फैसला नहीं है। यह एक कूटनीतिक संदेश भी है कि अमेरिका भारत को अपने सबसे अहम रणनीतिक साझेदारों में गिनता है।टैरिफ विवाद के बावजूद यह फैसला बताता है कि दोनों देश दीर्घकालिक हितों को तात्कालिक मतभेदों से ऊपर रखते हैं। यह रिश्तों में परिपक्वता का संकेत है। अब सबकी नजर इस पर है कि भारत इस मौके का कैसे इस्तेमाल करता है। सिर्फ सदस्य बनना ही काफी नहीं होगा। जरूरत होगी तेज फैसलों, निवेश के अनुकूल नीतियों और मजबूत बुनियादी ढांचे की।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

जेएनयू का सवाल फिर वही क्या हर असहमति देशद्रोह है

@ सौम्या चौबे

5 जनवरी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का यह दिन हर साल एक अधूरी न्याय की याद दिलाता है। पांच साल पहले, इसी तारीख को जेएनयू परिसर में नकाबपोश लोगों ने छात्रों और शिक्षकों पर हमला किया था। लाइब्रेरी, हॉस्टल, गलियां,हर जगह अफरा-तफरी थी। कई छात्र घायल हुए। तस्वीरें देशभर में वायरल हुईं। लेकिन आज, पांच साल बाद भी उस हमले में न किसी की गिरफ्तारी हुई, न कोई ठोस कार्रवाई सामने आई।इसी घटना की याद में हर साल जेएनयू के छात्र कैंडल मार्च निकालते हैं। यह कोई नया आयोजन नहीं है। यह विरोध भी नहीं, बल्कि स्मृति है,उस रात की, उस डर की और उस सवाल की कि आखिर न्याय कब मिलेगा।इस साल भी 5 जनवरी को साबरमती हॉस्टल से एक कैंडल मार्च निकाला गया। इसे जेएनयू स्टूडेंट्स यूनियन ने पहले से प्लान किया था। लेकिन इस बार मामला सिर्फ याद और न्याय तक सीमित नहीं रहा। सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो ने पूरे आयोजन को विवाद के केंद्र में ला दिया।

वीडियो में कुछ नारे सुनाई दिए, जिनमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह का जिक्र था। इसके बाद तुरंत 2016 की याद दिलाई जाने लगी। वही 'देशविरोधी नारे', वही पुराने आरोप और वही सवाल-क्या जेएनयू फिर से देशद्रोह का अड्डा बन गया है?राजनीतिक बयानबाज़ी शुरू हो गई। टीवी डिबेट्स में जेएनयू एक बार फिर कटघरे में खड़ा कर दिया गया।लेकिन इस बहस के बीच एक अहम बात लगभग गायब हो गई,नारे क्यों लगे और किस संदर्भ में लगे।

जेएनयू के कुछ छात्रों का साफ कहना है कि इस कैंडल मार्च का शरजील इमाम, उमर खालिद या सुप्रीम कोर्ट के किसी फैसले से कोई लेना-देना नहीं था। न ही यह किसी व्यक्ति के समर्थन या विरोध में आयोजित किया गया था। यह सिर्फ 5 जनवरी 2020 की हिंसा की याद और न्याय की मांग का कार्यक्रम था।छात्रों का आरोप है कि सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो को संदर्भ से काटकर दिखाया गया और मीडिया के एक हिस्से ने दो अलग-अलग बातों को जोड़कर पूरी तस्वीर ही बदल दी।

इस मामले पर जब मैंने जेएनयू छात्रसंघ की वाइस प्रेसिडेंट गोपिका से फोन पर बात की, तो उनका कहना था कि नारे किसी व्यक्ति के खिलाफ नहीं थे, बल्कि एक विचारधारा के खिलाफ थे।उनके शब्दों में, "जेएनयू में हमेशा से पितृसत्ता और ब्राह्मणवाद के खिलाफ नारे लगते रहे हैं। ये नारे सत्ता की उस सोच के खिलाफ होते हैं जो महिलाओं, अल्पसंख्यकों और हाशिए पर खड़े समुदायों के खिलाफ खड़ी दिखाई देती है। इन्हें व्यक्तिगत हमला समझना गलत है।"

गोपिका का यह भी कहना है कि जेएनयू की परंपरा में प्रतीकात्मक नारे हमेशा से रहे हैं। इनका मकसद किसी को शारीरिक नुकसान पहुंचाना नहीं होता, बल्कि असहमति दर्ज कराना होता है।यहीं से असली सवाल शुरू होता है।सवाल यह नहीं है कि नारे अच्छे थे या बुरे।सवाल यह है कि क्या हर विरोध, हर असहमति और हर असहज सवाल को देशद्रोह कहना सही है?जेएनयू का इतिहास बताता है कि यह विश्वविद्यालय हमेशा से सवाल पूछने की जगह रहा है। यहां सत्ता से सहमत होना अनिवार्य नहीं माना गया। यहां बहस, विरोध और असहमति को लोकतंत्र का हिस्सा समझा गया।

लेकिन पिछले कुछ सालों में जेएनयू की पहचान एक ऐसे कैंपस के रूप में बना दी गई है, जहां हर गतिविधि को शक की नजर से देखा जाता है। किसी एक वीडियो, किसी एक नारे या किसी एक पोस्ट के आधार पर पूरे विश्वविद्यालय को देशविरोधी ठहराना अब आम बात हो गई है।यह भी सच है कि अगर कोई नारा या बयान कानून के दायरे से बाहर जाता है, तो उसकी जांच होनी चाहिए। कानून सबके लिए बराबर है। लेकिन जांच का मतलब यह नहीं हो सकता कि पूरे संस्थान को दोषी ठहरा दिया जाए।

5 जनवरी 2020 की हिंसा का मामला इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। उस दिन छात्रों पर हमला हुआ, लेकिन आज तक यह साफ नहीं हो पाया कि हमलावर कौन थे। नतीजा यह है कि पीड़ित आज भी न्याय का इंतजार कर रहे हैं।ऐसे में जब छात्र हर साल कैंडल मार्च निकालते हैं, तो यह सवाल उठाना जरूरी है कि क्या उनकी पीड़ा को सुना जा रहा है या नहीं।बाहर की दुनिया में जेएनयू की छवि एक 'विवादित कैंपस' की बना दी गई है। मीडिया की अधूरी रिपोर्टिंग अक्सर जेएनयू को समझने की बजाय उसे टैग करने का काम करती है। बहस इस पर नहीं होती कि छात्र क्या कह रहे हैं, बल्कि इस पर होती है कि उन्हें कैसे चुप कराया जाए।

लोकतंत्र सिर्फ सहमति से नहीं चलता। असहमति उसकी रीढ़ होती है। अगर हर असहमति को देशद्रोह कह दिया जाएगा, तो सवाल पूछने की जगहें धीरे-धीरे खत्म हो जाएंगी।जेएनयू को पसंद किया जाए या नहीं, उससे सहमत हुआ जाए या नहीं। यह हर किसी का अधिकार है। लेकिन उसे सुना जाना चाहिए। क्योंकि सवालों से डरना लोकतंत्र की ताकत नहीं, उसकी कमजोरी होती है। 5 जनवरी का कैंडल मार्च सिर्फ मोमबत्तियों का जुलूस नहीं था। यह उस सवाल की याद थी, जो आज भी अनुत्तरित है। क्या इस देश में न्याय की मांग करना अपराध है?

स्कीइंग हादसे की दुखद सच्चाई: अनिल अग्रवाल के बेटे की मौत और हजारों करोड़ की संपत्ति का सवाल

हादसे की पूरी जानकारी

अनिल अग्रवाल, वेदांता ग्रुप के चेयरमैन, के परिवार में हाल ही में एक बड़ा दुख आया जब उनके बेटे अग्निवेश अग्रवाल की मौत हो गई। यह घटना जनवरी 2026 की शुरुआत में हुई, जब अग्निवेश अमेरिका में स्कीइंग कर रहे थे। स्कीइंग के दौरान उन्हें चोट लगी और वे न्यू यॉर्क के माउंट सिनाई अस्पताल में भर्ती हुए। डॉक्टरों के मुताबिक, वे ठीक हो रहे थे, लेकिन अचानक दिल का दौरा पड़ने से उनकी मौत हो गई। अग्निवेश की उम्र सिर्फ 49 साल थी और वे स्वस्थ जीवन जीते थे। अनिल अग्रवाल ने सोशल मीडिया पर इसे अपनी जिंदगी का सबसे बुरा दिन बताया और परिवार के दुख को साझा किया। यह हादसा हमें याद दिलाता है कि खेल कितना भी मजेदार हो, लेकिन कभी-कभी जीवन को खतरे में डाल सकता है। कई रिपोर्ट्स बताती हैं कि स्कीइंग में ऐसे हादसे आम हैं, जहां तेज रफ्तार या गिरने से चोट लगती है। अग्निवेश का परिवार अब इस सदमे से उबरने की कोशिश कर रहा है, जबकि कारोबार की दुनिया में सवाल उठ रहे हैं कि आगे क्या होगा। अनिल अग्रवाल ने बेटे की याद में अपनी संपत्ति का बड़ा हिस्सा समाज को देने का वादा दोहराया है। यह घटना सिर्फ एक परिवार की नहीं, बल्कि हमें जीवन की अनिश्चितता के बारे में सोचने पर मजबूर करती है। क्या ऐसे हादसों से बचा जा सकता है? विशेषज्ञ कहते हैं कि सही तैयारी से जोखिम कम हो सकता है, लेकिन पूरी तरह खत्म नहीं। इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि परिवार और स्वास्थ्य सबसे ऊपर हैं, चाहे कितना बड़ा कारोबार हो। कुल मिलाकर, यह दुखद घटना हमें जीवन के हर पल को महत्व देने की याद दिलाती है।

स्कीइंग खेल की सच्चाई और खतरे

स्कीइंग एक ऐसा खेल है जो बर्फ पर तेज रफ्तार से फिसलने का मजा देता है, लेकिन इसमें बड़े खतरे भी छिपे हैं। यह खेल मुख्य रूप से पहाड़ी इलाकों में खेला जाता है, जहां लोग स्की नाम की लंबी पट्टियां पैरों में बांधकर बर्फ पर सरकते हैं। अमेरिका, यूरोप और भारत के हिमाचल या कश्मीर जैसे जगहों में यह लोकप्रिय है। शुरुआती लोग इसे सीखने के लिए कोच की मदद लेते हैं, लेकिन अनुभवी लोग भी हादसों का शिकार हो जाते हैं। खतरे की बात करें तो गिरने से घुटने, सिर या दिल की चोट लग सकती है, जैसे अग्निवेश के साथ हुआ। रिपोर्ट्स बताती हैं कि हर साल हजारों लोग स्कीइंग में घायल होते हैं, और कभी-कभी मौत भी हो जाती है। तेज स्पीड, पेड़ों से टकराना या अचानक मौसम बदलना मुख्य कारण हैं। सुरक्षा के लिए हेलमेट, सही कपड़े और ट्रेनिंग जरूरी है। विशेषज्ञ कहते हैं कि नौसिखिए लोगों को ज्यादा खतरा होता है, इसलिए धीरे-धीरे सीखना चाहिए। लेकिन क्या यह खेल सिर्फ अमीरों का शौक है? नहीं, अब कई लोग इसे आजमाते हैं, लेकिन जोखिम हमेशा रहता है। अग्निवेश जैसा हादसा हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या मजा लेने के चक्कर में जान जोखिम में डालना ठीक है। दूसरी तरफ, अगर सही तरीके से खेला जाए तो यह फिटनेस बढ़ाता है और तनाव कम करता है। कुल मिलाकर, स्कीइंग एक रोमांचक खेल है, लेकिन इसमें संतुलन बनाना जरूरी है। अगर आप इसे आजमाना चाहें तो पहले सुरक्षा के नियम सीखें, ताकि मजा बिना खतरे के हो। यह खेल हमें जीवन की तरह ही सिखाता है कि हर कदम पर सावधानी बरतनी चाहिए।

अनिल अग्रवाल और वेदांता की कहानी

अनिल अग्रवाल एक बड़े कारोबारी हैं, जिन्होंने वेदांता ग्रुप को दुनिया की बड़ी कंपनियों में शुमार किया। वे बिहार के पटना से हैं और छोटे से कारोबार से शुरू करके आज माइनिंग, तेल और धातु के क्षेत्र में अरबों का साम्राज्य खड़ा किया है। उनकी कंपनी वेदांता का कारोबार भारत समेत कई देशों में फैला है, और वे पर्यावरण और समाज सेवा में भी सक्रिय रहते हैं। उनकी नेट वर्थ लगभग 4.2 बिलियन डॉलर है, जो भारतीय रुपये में 35,000 करोड़ से ज्यादा है। लेकिन बेटे की मौत के बाद सवाल उठ रहे हैं कि यह साम्राज्य आगे कैसे चलेगा। अनिल अग्रवाल ने हमेशा परिवार को महत्व दिया, लेकिन कारोबार को प्रोफेशनल तरीके से चलाते हैं। उनकी पत्नी किरण और बेटी प्रिया परिवार का हिस्सा हैं। प्रिया वेदांता में नॉन-एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं और कंपनी के फैसलों में शामिल रहती हैं। अग्निवेश भी कंपनी से जुड़े थे, लेकिन अब उनकी कमी खलेगी। अनिल अग्रवाल ने बेटे की मौत के बाद कहा कि वे अपनी संपत्ति का 75 प्रतिशत हिस्सा समाज को दान करेंगे, जो एक बड़ा कदम है। यह फैसला हमें सोचने पर मजबूर करता है कि अमीर लोग अपनी कमाई का इस्तेमाल कैसे करें। एक तरफ कारोबार की स्थिरता जरूरी है, दूसरी तरफ परिवार की सुरक्षा। वेदांता जैसी कंपनी में हजारों लोग काम करते हैं, इसलिए सुक्सेशन प्लान महत्वपूर्ण है। अनिल अग्रवाल की कहानी हमें सिखाती है कि मेहनत से बड़ा साम्राज्य बनाया जा सकता है, लेकिन जीवन की अनिश्चितताओं से कोई नहीं बच सकता। आगे देखना होगा कि कंपनी कैसे आगे बढ़ती है।

संपत्ति का भविष्य और परिवार की भूमिका

अनिल अग्रवाल की हजारों करोड़ की संपत्ति अब एक बड़ा सवाल बन गई है, खासकर बेटे अग्निवेश की मौत के बाद। उन्होंने पहले ही ऐलान किया था कि 75 प्रतिशत संपत्ति दान करेंगे, और अब इसे दोहराया है। यह फैसला बेटे की इच्छा से जुड़ा है, जो समाज सेवा पर जोर देते थे। बाकी संपत्ति परिवार में बंटेगी, जहां बेटी प्रिया अग्रवाल हेब्बर मुख्य भूमिका निभा सकती हैं। प्रिया कंपनी में सक्रिय हैं और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर काम करती हैं। उनकी बहन पूजा बंगुर भी परिवार का हिस्सा हैं, लेकिन कारोबार में कम दिखती हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि वेदांता जैसी कंपनी प्रोफेशनल मैनेजमेंट पर चलती है, इसलिए परिवार के अलावा सीईओ और बोर्ड महत्वपूर्ण हैं। सुक्सेशन प्लान में ट्रस्ट या दान फंड का इस्तेमाल हो सकता है, ताकि संपत्ति सुरक्षित रहे। लेकिन क्या यह आसान होगा? एक तरफ परिवार का दुख है, दूसरी तरफ कारोबार की जिम्मेदारी। अनिल अग्रवाल की उम्र 72 साल है, इसलिए आगे का प्लान जरूरी है। रिपोर्ट्स बताती हैं कि वे भारत में बड़े निवेश कर रहे हैं, जैसे प्राइवेटाइजेशन में। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि अमीरों की संपत्ति सिर्फ परिवार की नहीं, बल्कि समाज की भी होनी चाहिए। अगर दान होता है तो शिक्षा या स्वास्थ्य में फायदा होगा। कुल मिलाकर, यह स्थिति बैलेंस बनाने की है, जहां परिवार सुरक्षित रहे और कारोबार बढ़े। अनिल अग्रवाल का यह कदम दूसरों के लिए मिसाल बन सकता है।

जीवन के सबक और आगे की राह

यह पूरी घटना हमें जीवन के कई सबक सिखाती है, जहां खेल का मजा मौत में बदल सकता है और संपत्ति के सवाल परिवार को परेशान कर सकते हैं। स्कीइंग जैसे खेल में जोखिम हमेशा रहता है, लेकिन सही सुरक्षा से इसे कम किया जा सकता है। अनिल अग्रवाल का परिवार अब दुख से उबर रहा है, जबकि वे दान का वादा निभाने पर जोर दे रहे हैं। यह सोचने वाली बात है कि क्या अमीर लोग अपनी कमाई का ज्यादा हिस्सा समाज को दें। एक तरफ परिवार की जरूरतें हैं, दूसरी तरफ सामाजिक जिम्मेदारी। वेदांता ग्रुप आगे बढ़ेगा, क्योंकि यह मजबूत नींव पर खड़ा है। प्रिया जैसी युवा पीढ़ी नई दिशा दे सकती है। लेकिन क्या ऐसे हादसे रोकने के लिए ज्यादा जागरूकता चाहिए? हां, खेल में ट्रेनिंग और स्वास्थ्य जांच जरूरी है। अनिल अग्रवाल की कहानी हमें बताती है कि जीवन अनिश्चित है, इसलिए योजना पहले बनाएं। दान का फैसला विचारोत्तेजक है, क्योंकि इससे लाखों लोगों को फायदा होगा। कुल मिलाकर, यह घटना बैलेंस्ड नजरिए से देखें: दुख है, लेकिन आगे की राह भी। समाज को ऐसे उदाहरणों से सीख मिलती है कि संपत्ति का सही इस्तेमाल कैसे करें।

यह पिछली सदी के उम्मीद भरे आख़िरी दिनों की बात है
सदी बदलने से तो यूँ बदलने वाला कुछ नहीं था

पर तुम अचानक मिली जब मुझे
यक़ीन हो चला था

आने वाले समय में बेहतर होगी दुनिया
विलुप्त हुई नदियाँ

दंतकथाओं से निकल धरती पर बहेंगी
बारूद सिर्फ़ दियासलाई बनाने के काम आएगा

और ऐसे ही न जाने कितने सपनों ने
आँखों में घोंसला बना लिया था

मैं साफ़-साफ़ नहीं देख पाता था वक़्त।

तुम किसी आदिम प्यास के स्वप्न में
मेरे भीतर की बावड़ी तक

अनजाने ही आ गई थीं
वहाँ इतना निथरा था जल

यक़ीनन उसमें तुम
रूप अपना ही देख मुग्ध हुईं

वरना पास तुम्हारे वहाँ आने और बैठ जाने की
वाजिब कोई वजह मौजूद नहीं थी

तुम्हारा आना इतना अप्रत्याशित था
मैं नहीं जानता था

किस नाम से पुकारूँ तुम्हें
तुम्हारी गंध को पहले-पहल मैंने

ख़ुशनुमा जंगल की देन समझा
हड़बड़ाहट में मेरे बहुत ज़्यादा बोलने के बाद भी

तुम कुछ भी सुन नहीं पाईं
जानता ही कहाँ था मैं तब स्पर्श की भाषा।

अपने लिए हल्की तरफ़दारी के साथ ही सही

आज भी याद है मुझे सब
और इस बीच दस बरस बीत गए हैं

और प्रेम किसी वायरस की तरह चिह्नित किया जा चुका है
बचाव के लिए हम सभी

ख़ुद को स्मृतिहीन बना रहे हैं
कि कहीं दर्ज न हो पाएँ

एक काँपते हुई पल के थमे हुए रंग
कोई ऐसी ध्वनि जो गूँजती रहे ताउम्र

और काया से परे का कोई स्पर्श
बाक़ी सब भी मिटाए जाने की सहूलियत के साथ

कुछ गीगाबाइट मेमोरी के हवाले रहे
सभी बदल रहे हैं लगातार

प्रेम नहीं
वह आज भी आपको नष्ट करने की क्षमता रखता है

बावजूद इसके कि हम सभी
अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में लगे हैं।

इन दस बरसों में सभी दस अंकों की एक संख्या में तब्दील हो गए हैं
लगातार चल रहा है

असंख्य संख्याओं के बीच
जमा-घटाव-गुणा-भाग

एक संख्या दूसरी से इतना बतियाती है
जैसे अभी-अभी ईजाद हुई हो भाषा

ख़ुदा का शुक्र था
जब हम मिले संवाद कम चुप्पियाँ ज़्यादा बोलती थीं।

उस वक़्त मेरे भीतर सिर्फ़ कविताएँ थीं
रगों में ख़ून नहीं स्याही दौड़ती थी

और कविताएँ धीरे-धीरे ही सही
हमारे बीच पुल बन गई थीं

उनसे होकर हम आ-जा सकते थे
एक दूसरे के भीतर

कविताएँ तुम भी लिखती थीं
अब नहीं लिखती होओगी

सफ़ेद पड़ चुके हल्के गुलाबी रंग वाली स्मृतियों के साथ
उन्हें भी छोड़ दिया होगा तुमने

जैसे दुर्गम पहाड़ पर चढ़ने से पहले
पर्वतारोही आधार शिविर में छोड़ देता है

अगले सफ़र के लिए ग़ैरज़रूरी हो गया
बहुत-सा सामान।

मुझसे बरस दो बरस उम्र में

छोटा होने के बावजूद
कितना समझदार थीं तुम

जान लिया था कि नहीं जिया जा सकता उसके साथ
जो हमारे बीच

इतना पवित्र था कि प्रेम ही हो सकता था।

तुम्हारा जाना मेरे लिए
गहरी नींद से जगकर आँखें मलने जैसा था

मैंने दुनिया को नई नज़र से देखा
इन दस बरसों में

कठिन अभ्यास से अर्जित की है मैंने
सामने घटित होते हुए को न देख पाने की दृष्टि

सिर्फ़ उन आवाज़ों को पहचानने का हुनर
जो मेरे पक्ष में हैं

या जिन्हें मेरे पक्ष में किया जा सकता है
और भाषा का वह तिलिस्म

जिससे अपनी आत्मा के सिवा
सभी को छला जा सकता है

हो सकता है किसी रोज़
तुम मेरे सामने से गुज़रो

और मैं तुम्हें देखूँ एक अपरिचित मुस्कान के साथ।

प्रदीप सैनी

नई पीढ़ी के कवि

नेशनल यूथ डे पर सवाल भी, जवाब भी

क्या आज के भारत में विवेकानंद जैसी चिंगारी अब भी ज़िंदा है

@ रिंकू विश्वकर्मा

आज नेशनल यूथ डे है। देश स्वामी विवेकानंद की जयंती मना रहा है। हर मंच से वही परिचित सवाल दोहराया जा रहा है , क्या आज का युवा भटक गया है? क्या मोबाइल, सोशल मीडिया और रील्स की दुनिया ने विवेकानंद जैसे तेजस्वी युवाओं को खत्म कर दिया है ?यह सवाल जितना लोकप्रिय है, उतना ही अधूरा भी।क्योंकि अगर ज़रा गहराई से देखा जाए, तो जवाब हमारे आसपास ही मौजूद है। आज का युवा अलग है, लेकिन कमजोर नहीं। उसकी भाषा बदली है, उसके औज़ार बदले हैं, लेकिन उसकी आग अभी बुझी नहीं है।इसी सवाल का जवाब तलाशने के लिए मैंने 20 से 25 साल के युवाओं पर नज़र डाली। कोई सरकारी सर्वे नहीं, कोई आंकड़ों का खेल नहीं। सिर्फ ज़मीनी हकीकत। जो सामने आया, उसने यह धारणा ही तोड़ दी कि आज का युवा सिर्फ शिकायत करता है।आज का युवा समाधान गढ़ रहा है।

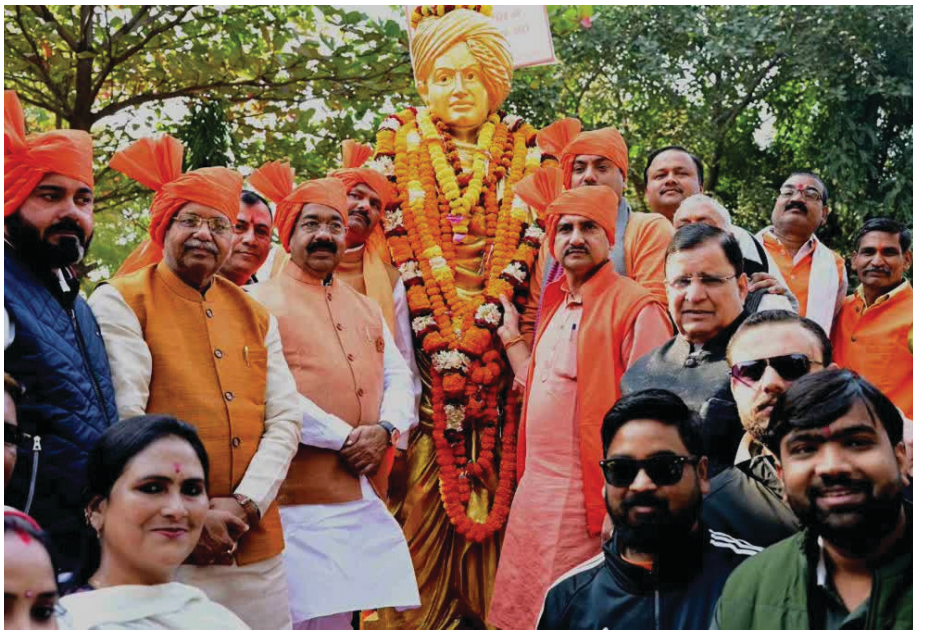

सबसे पहले बात करते हैं कैवल्य वोहरा की। महज़ 22 साल की उम्र और करीब 3,600 करोड़ रुपये की कुल संपत्ति। कैवल्य आज भारत के सबसे युवा अरबपति हैं। स्टैनफोर्ड जैसी यूनिवर्सिटी की पढ़ाई बीच में छोड़कर उन्होंने एंटरप्रेन्योरशिप का रास्ता चुना। उन्होंने यह साबित किया कि बड़ी सोच के लिए उम्र नहीं, हिम्मत चाहिए। स्टार्टअप अब उनके लिए सिर्फ कारोबार नहीं, एक आंदोलन है।इसके ठीक उलट पृष्ठभूमि से आती हैं नैंसी त्यागी। उम्र 23 साल। यूपी के छोटे से गांव बरनवा से दिल्ली तक का सफर। 12वीं के बाद UPSC की तैयारी करने आईं, लेकिन घर की आर्थिक हालत ने मजबूर किया कि सिलाई मशीन से दोस्ती करें। उसी सिलाई ने नैंसी को 77वें कान्स फिल्म फेस्टिवल के रेड कार्पेट तक पहुंचा दिया। 20 किलो के गुलाबी फ्रिल गाउन में, जिसे उन्होंने खुद डिजाइन किया था। वह पल सिर्फ फैशन का नहीं, आत्मनिर्भरता का था।

दिव्या देशमुख, उम्र सिर्फ 20 साल। पहली भारतीय महिला जिन्होंने चेस वर्ल्ड कप जीतकर इतिहास रचा। शतरंज जैसे धैर्य और एकाग्रता के खेल में दिव्या ने दुनिया को बताया कि भारत की बेटियां सिर्फ बोर्ड पर नहीं, वैश्विक मंच पर भी चाल चलना जानती हैं।

मैथिली ठाकुर की कहानी अलग है। 25 साल की मैथिली ने पहले अपनी आवाज़ से लाखों दिल जीते। लोक संगीत को नई पीढ़ी से जोड़ा। अब संसद तक पहुंचकर वह वह काम कर रही हैं, जिसके लिए बड़े-बड़े नाम तरसते हैं। मैथिली बताती हैं कि प्रतिभा अगर सही दिशा पा जाए, तो वह सत्ता के गलियारों तक भी पहुंच सकती है।

फिर हैं शीतल देवी। 19 साल की उम्र। हाथ नहीं हैं, लेकिन हौसले इतने बड़े कि एशियन पैरा गेम्स में दो स्वर्ण और एक रजत पदक जीत लिया। अर्जुन पुरस्कार भी हासिल किया। शीतल की कहानी उन लाखों युवाओं के लिए जवाब है, जो हालात को अपनी हार मान लेते हैं।

क्रिकेट प्रेमियों के लिए वैभव सूर्यवंशी कोई परिचय का मोहताज नहीं। सिर्फ 14 साल की उम्र में मैदान पर ऐसा तूफान, जिसे देखकर बड़े-बड़े दिग्गज हैरान हैं। वैभव दिखाता है कि प्रतिभा उम्र की मोहताज नहीं होती।

डी. गुकेश, 19 साल। दुनिया के सबसे कम उम्र के वर्ल्ड चेस चैंपियन। गुकेश ने यह साबित किया कि भारत अब सिर्फ खेलों में हिस्सा लेने वाला देश नहीं रहा, बल्कि जीतने वाला देश बन चुका है।

स्टार्टअप और डिफेंस सेक्टर में जुनैल आब्दीन का नाम तेजी से उभरा है। 25 साल की उम्र में उन्होंने एव्याॅम स्पेसटेक और डिफेंस की नींव रख दी। ऐसे क्षेत्र में, जहां आमतौर पर बड़ी उम्र और भारी पूंजी को जरूरी माना जाता है, जुनैल ने युवाओं की क्षमता को नई पहचान दी।

प्रांजलि अवस्थी, उम्र सिर्फ 18 साल। अमेरिका में 100 करोड़ रुपये की कंपनी खड़ी कर चुकी हैं। उनका एआई स्टार्टअप टेक्नोलॉजी की दुनिया में नया अध्याय जोड़ रहा है। प्रांजलि ने महज़ 11 साल की उम्र में कोडिंग शुरू कर दी थी। वह बताती हैं कि सही मार्गदर्शन और जिज्ञासा मिल जाए, तो उम्र कोई बाधा नहीं।

तेजस्वी मनोज, 17 साल। उन्होंने 'तेजस्वी शील्ड सीनियर्स' नाम का साइबर सिक्योरिटी प्लेटफॉर्म बनाया है। इसका मकसद बुजुर्गों को ऑनलाइन ठगी से बचाना है। जहां अधिकतर युवा खुद की समस्या तक सीमित रहते हैं, तेजस्वी दूसरों की चिंता का समाधान खोज रहे हैं।

संगीत की दुनिया में लिडियन नादस्वरम ने देश का नाम ऊंचा किया। 19 साल के इस पियानोवादक ने 13 साल की उम्र में 6.9 करोड़ रुपये का अंतरराष्ट्रीय इनाम जीता था। उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु बनाया।

आध्यात्मिक क्षेत्र में भी युवा पीछे नहीं हैं। काशी के देवव्रत महेश रेखे, उम्र 19 साल। उन्होंने 200 साल बाद 'दंडक्रम पारायण' कर इतिहास रच दिया। करीब 2,000 मंत्रों का पाठ, बिना किसी ग्रंथ को देखे, शुद्धता और लय के साथ। यह बताता है कि आज का युवा सिर्फ आधुनिक ही नहीं, अपनी जड़ों से भी जुड़ा है।

ये सभी चेहरे अलग-अलग हैं। कोई करोड़पति है, कोई खिलाड़ी, कोई कलाकार, कोई साधक। लेकिन एक बात सबमें समान है।ये इंतजार नहीं करते।

ये शिकायत नहीं करते।ये परिस्थितियों को दोष नहीं देते।ये इतिहास बनाते हैं।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था,"उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।"आज का युवा उसी वाक्य को अलग भाषा में जी रहा है।आज का युवा सवाल भी है।आज का युवा जवाब भी है।और सबसे बड़ी बात -आज का युवा समाधान भी है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

अमेरिका को फिर से स्वस्थ बनाने की कोशिश

हेल्थकेयर संकट इतना गहरा क्यों, जो नई डाइट गाइडलाइंस लानी पड़ीं?

अमेरिका में स्वास्थ्य का संकट दिन-ब-दिन गहराता जा रहा है, और इसी वजह से ट्रंप प्रशासन ने 'मेक अमेरिका हेल्दी अगेन' नाम की एक बड़ी मुहिम शुरू की है। यह मुहिम जनवरी 2026 में शुरू हुई, जब राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने स्वास्थ्य विभाग के सचिव रॉबर्ट एफ कैनेडी जूनियर और कृषि विभाग के साथ मिलकर नई डाइट गाइडलाइंस जारी कीं। ये गाइडलाइंस 2025 से 2030 तक के लिए हैं, और इनका मकसद है लोगों को दवाओं पर कम निर्भर बनाना और असली खाने पर जोर देना। अमेरिका में मोटापा, डायबिटीज और दिल की बीमारियां इतनी बढ़ गई हैं कि हर साल स्वास्थ्य पर खर्च 4.9 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गया है। इसमें से 90 प्रतिशत हिस्सा सिर्फ पुरानी बीमारियों पर जाता है, जो ज्यादातर खराब खान-पान से जुड़ी हैं। सीडीसी के मुताबिक, 40 प्रतिशत वयस्क मोटापे के शिकार हैं, और 20 प्रतिशत बच्चे भी इस समस्या से जूझ रहे हैं। इससे न सिर्फ लोगों की उम्र कम हो रही है, बल्कि सेना में भर्ती होने वाले युवाओं में भी 77 प्रतिशत अयोग्य पाए जा रहे हैं, क्योंकि वे पुरानी बीमारियों से प्रभावित हैं। ट्रंप प्रशासन का कहना है कि पिछले दशकों की डाइट गाइडलाइंस में कंपनियों के हितों को ज्यादा महत्व दिया गया, जिससे प्रोसेस्ड फूड बढ़ा और स्वास्थ्य बिगड़ा। अब इस मुहिम के तहत, वे खाने में कृत्रिम रंगों को हटाने, दवाओं की कीमतें कम करने और वैक्सीन की सुरक्षा पर जांच करने जैसे कदम उठा रहे हैं। इससे अमेरिका को स्वस्थ, मजबूत और आर्थिक रूप से मजबूत बनाने की उम्मीद है। लेकिन सवाल यह है कि क्या ये बदलाव वाकई काम करेंगे, या सिर्फ शुरुआती उत्साह है? स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं कि रोकथाम पर जोर देकर खर्च कम किया जा सकता है, लेकिन इसमें समय लगेगा। कुल मिलाकर, यह संकट इतना गहरा है कि सरकार को खाने की नीतियों में बड़ा बदलाव लाना पड़ा, ताकि लोग स्वस्थ जीवन जी सकें और देश की अर्थव्यवस्था पर बोझ कम हो।

संकट की शुरुआत: अमेरिका में स्वास्थ्य का बड़ा खतरा

स्वास्थ्य संकट की गहराई: आंकड़े जो डराते हैं

अमेरिका का स्वास्थ्य संकट सिर्फ एक समस्या नहीं, बल्कि एक बड़ी चुनौती है, जो अर्थव्यवस्था और समाज को प्रभावित कर रही है। 2025 में स्वास्थ्य खर्च 4.9 ट्रिलियन डॉलर था, और 2026 में इसमें 7 से 9 प्रतिशत की बढ़ोतरी होने की उम्मीद है। मोटापे से जुड़ी बीमारियां अकेले 173 बिलियन से 1.72 ट्रिलियन डॉलर का खर्च कराती हैं, जो जीडीपी का 9.3 प्रतिशत है। केएफएफ की रिपोर्ट बताती है कि लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं और अचानक आने वाले मेडिकल बिलों से सबसे ज्यादा परेशानी है। फोर्ब्स की एक रिपोर्ट कहती है कि 73 प्रतिशत वयस्क ज्यादा वजन के शिकार हैं, और 40 प्रतिशत मोटापे से पीड़ित हैं। इससे दिल के दौरे, स्ट्रोक और सूजन वाली बीमारियां बढ़ रही हैं। पुरानी बीमारियां जैसे डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर और कैंसर, स्वास्थ्य खर्च का 90 प्रतिशत हिस्सा खा जाती हैं। टीएफएएच की 2025 रिपोर्ट में बताया गया कि मोटापा हर राज्य में बढ़ रहा है, और इससे जुड़ी जटिलताएं तीन गुना ज्यादा खर्च कराती हैं। 2026 में दवाओं की कीमतें और पुरानी बीमारियों की वजह से खर्च और बढ़ेगा। पीडब्ल्यूसी की भविष्यवाणी है कि मेडिकल कॉस्ट 8.5 प्रतिशत बढ़ सकती है। इससे न सिर्फ लोग आर्थिक रूप से टूट रहे हैं, बल्कि जीवन प्रत्याशा भी अन्य विकसित देशों से 4 साल कम है। सेना में भर्ती के लिए योग्य युवा कम हो रहे हैं, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है। विशेषज्ञ कहते हैं कि अगर रोकथाम पर ध्यान न दिया गया, तो 2026 में स्वास्थ्य का बोझ और बढ़ेगा। लेकिन कुछ रिपोर्ट्स बताती हैं कि अगर मोटापा 15 प्रतिशत कम हो, तो मेडिकेयर पर प्रति व्यक्ति 1,000 डॉलर की बचत हो सकती है। कुल मिलाकर, यह संकट इतना गहरा है कि ट्रंप प्रशासन को नई नीतियां लानी पड़ीं, ताकि लोग स्वस्थ रहें और खर्च कम हो। लेकिन आलोचक कहते हैं कि सिर्फ डाइट बदलने से सब ठीक नहीं होगा, क्योंकि गरीबी और पहुंच की कमी भी बड़ी समस्या है।

नई डाइट गाइडलाइंस: क्या बदला और क्यों?

ट्रंप प्रशासन की नई डाइट गाइडलाइंस 2025-2030 में बड़ा बदलाव लाती हैं, जो असली खाने पर जोर देती हैं। इनमें कहा गया है कि लोगों को ज्यादा प्रोटीन जैसे अंडे, मुर्गी, मछली, मीट, दालें, नट्स और सोया से लेना चाहिए। स्वस्थ फैट्स जैसे मीट, अंडे, मछली, नट्स, दूध, जैतून और एवोकाडो को बढ़ावा दिया गया है। फल, सब्जियां और साबुत अनाज को जरूरी बताया गया, जबकि प्रोसेस्ड फूड, रिफाइंड कार्ब्स जैसे सफेद ब्रेड, चीनी वाली ड्रिंक्स और कृत्रिम मीठे को कम करने की सलाह है। बच्चों के लिए 4 साल तक चीनी पूरी तरह बंद करने को कहा गया है। ये गाइडलाइंस उम्र, जीवन चरण और स्वास्थ्य स्थिति के हिसाब से अनुकूलित हैं, जैसे गर्भवती महिलाओं या पुरानी बीमारियों वाले लोगों के लिए। एक सामान्य 2,000 कैलोरी डाइट में 3 सर्विंग सब्जियां और 2 सर्विंग फल रोज सुझाए गए हैं। यह बदलाव इसलिए आया क्योंकि पुरानी गाइडलाइंस में कंपनियों के हितों को ज्यादा जगह मिली, जिससे प्रोसेस्ड फूड बढ़ा। अब फूड पिरामिड को फिर से असली खाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। यूएसडीए और एचएचएस के मुताबिक, यह स्वास्थ्य को दवाओं से पहले रखता है। कैनेडी जूनियर ने कहा कि ये गाइडलाइंस बुनियादी बातों पर लौटाती हैं, ताकि परिवार स्वस्थ खाएं। ब्रूक रॉलिंस ने बताया कि किसान और रैंचर इस बदलाव में अहम भूमिका निभाएंगे, ज्यादा प्रोटीन और डेयरी को बढ़ावा देकर। यह मुहिम मेक अमेरिका हेल्दी अगेन का हिस्सा है, जो पुरानी बीमारियों को रोकने पर फोकस करती है। लेकिन कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि ये सलाह मोटापे को सरल बना देती है, और स्वास्थ्य समानता को नजरअंदाज करती है। कुल मिलाकर, ये गाइडलाइंस अमेरिकियों को स्वस्थ जीवन की ओर ले जाने की कोशिश हैं, लेकिन अमल में चुनौतियां होंगी।

बदलाव के पीछे का कारण: रोकथाम से संकट पर काबू

ट्रंप प्रशासन ने नई डाइट गाइडलाइंस इसलिए लाईं क्योंकि स्वास्थ्य संकट रोकथाम की कमी से गहराया है। अमेरिका में पुरानी बीमारियां डाइट से जुड़ी हैं, और इन पर 90 प्रतिशत स्वास्थ्य खर्च होता है। ओईसीडी के मुताबिक, अमेरिका में मोटापा और डायबिटीज सबसे ज्यादा है, जबकि जीवन प्रत्याशा कम। बच्चों में मोटापा फ्रांस से पांच गुना ज्यादा है, और एक तिहाई किशोरों में प्री-डायबिटीज है। इससे स्वास्थ्य खर्च 2.5 गुना ज्यादा है अन्य देशों से। प्रशासन का कहना है कि असली खाने से ये बीमारियां रोकी जा सकती हैं, और खर्च कम होगा। जैसे, एसएनएपी प्रोग्राम में 78 प्रतिशत लोग मेडिकेड पर हैं, और चीनी वाली चीजों पर सब्सिडी से समस्या बढ़ती है। अब कृत्रिम रंगों को 2026 तक हटाने का प्लान है, जो बच्चों की सेहत को नुकसान पहुंचाते हैं। वैक्सीन टास्क फोर्स को फिर शुरू किया गया, और दवाओं की कीमतें कम करने के लिए मोस्ट फेवर्ड नेशन पॉलिसी लाई गई। एमएएचए कमीशन बच्चों की पुरानी बीमारियों की जांच करेगा। डॉ. बेन कार्सन और डॉ. ओज ने लिखा कि ये गाइडलाइंस अमेरिकियों की भलाई को पहले रखती हैं। लेकिन आलोचक कहते हैं कि ये बदलाव गरीबों और अल्पसंख्यकों की पहुंच को ध्यान में नहीं रखते। कुछ रिपोर्ट्स बताती हैं कि खाने की संस्कृति बदलने से स्वास्थ्य बेहतर होगा, लेकिन इसमें उद्योग का सहयोग जरूरी है। कुल मिलाकर, यह कदम संकट की जड़ पर हमला है, ताकि इलाज से पहले रोकथाम हो और देश स्वस्थ बने। लेकिन क्या यह सब कुछ ठीक कर पाएगा, यह समय बताएगा।

प्रतिक्रियाएं और भविष्य: उम्मीदें और चुनौतियां

नई डाइट गाइडलाइंस पर मिली-जुली प्रतिक्रियाएं आई हैं, जो स्वास्थ्य संकट को सुलझाने की कोशिश को दिखाती हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ जैसे एंड्रयू ह्यूबरमैन ने समर्थन किया, कहते हुए कि असली खाना स्वास्थ्य और खर्च दोनों सुधार सकता है। व्हाइट हाउस ने बताया कि ये गाइडलाइंस दशकों का सबसे बड़ा बदलाव हैं, जो असली खाने को पहले रखती हैं। लेकिन कुछ विशेषज्ञ चेताते हैं कि मोटापा सिर्फ डाइट से नहीं, बल्कि जीवनशैली, गरीबी और पहुंच से जुड़ा है। वर्ड इन ब्लैक की रिपोर्ट कहती है कि स्वास्थ्य समानता को नजरअंदाज किया गया, और सलाह ज्यादा फैट्स और कम ग्रेन्स पर है, जो सभी के लिए फिट नहीं। सीएनएन और एबीसी न्यूज ने बताया कि गाइडलाइंस ज्यादा प्रोटीन और पूर्ण वसा वाले डेयरी को बढ़ावा देती हैं, जो चीनी के खिलाफ जंग है। किसान और उद्योग खुश हैं, क्योंकि ज्यादा मीट और डेयरी की मांग बढ़ेगी। लेकिन आलोचक कहते हैं कि ये ओवरसिम्प्लिफाई करती हैं। भविष्य में, एमएएचए के तहत और कदम जैसे सोडा पर प्रतिबंध और दवाओं की कीमत कम करना, संकट को कम कर सकते हैं। अगर सफल रहा, तो स्वास्थ्य खर्च कम होगा और जीवन प्रत्याशा बढ़ेगी। लेकिन चुनौतियां हैं, जैसे लोगों की आदतें बदलना और उद्योग का विरोध। कुल मिलाकर, यह मुहिम विचारोत्तेजक है, जो संतुलित नजरिए से संकट को देखती है, लेकिन अमल पर निर्भर करेगी।

ईरान में राजशाही की वापसी का सवाल रेजा पहलवी की सक्रियता का रहस्य

ईरान की पुरानी कहानी: 1979 की क्रांति और राजशाही का अंत

ईरान की राजनीति में राजशाही का इतिहास बहुत पुराना है, लेकिन 1979 में हुई इस्लामी क्रांति ने सब कुछ बदल दिया। उस समय मोहम्मद रेजा पहलवी ईरान के शाह थे, जो पश्चिमी देशों के साथ अच्छे रिश्ते रखते थे और देश को आधुनिक बनाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन लोगों में असंतोष बढ़ता गया, क्योंकि आर्थिक असमानता, राजनीतिक दबाव और विदेशी हस्तक्षेप की शिकायतें थीं। अयातुल्ला खुमैनी के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन इतने बड़े हो गए कि शाह को देश छोड़कर भागना पड़ा। इसके बाद इस्लामी गणराज्य की स्थापना हुई, जहां धार्मिक नेता सुप्रीम लीडर बन गए। रेजा पहलवी, जो शाह के बेटे हैं, उस समय सिर्फ 18 साल के थे और वे अमेरिका में निर्वासन में चले गए। पिछले 47 सालों से वे बाहर रहते हुए ईरान की राजनीति पर नजर रखते हैं। वे खुद को क्राउन प्रिंस कहते हैं और कहते हैं कि वे लोकतंत्र चाहते हैं, न कि पुरानी तरह की राजशाही। लेकिन कुछ लोग उन्हें पुराने शासन की याद के रूप में देखते हैं। हाल के सालों में ईरान में आर्थिक संकट, महिलाओं के अधिकारों पर दबाव और युवाओं की बेरोजगारी ने फिर से असंतोष पैदा किया है। 2022 में महसा अमीनी की मौत के बाद विरोध शुरू हुए, जो अब 2025-2026 में और तेज हो गए हैं। इन प्रदर्शनों में कुछ लोग "जाविद शाह" यानी "शाह जिंदाबाद" के नारे लगा रहे हैं, जो रेजा पहलवी की तरफ इशारा करते हैं। लेकिन क्या यह पुरानी राजशाही की वापसी का संकेत है? या सिर्फ मौजूदा शासन के खिलाफ गुस्सा? यह सवाल ईरान के भविष्य को लेकर सोचने पर मजबूर करता है, क्योंकि इतिहास हमें सिखाता है कि क्रांतियां अक्सर अप्रत्याशित मोड़ लेती हैं। एक तरफ पुराने शासन की अच्छी यादें हैं, जैसे आर्थिक विकास और महिलाओं को कुछ आजादी, लेकिन दूसरी तरफ दमन और भ्रष्टाचार की शिकायतें भी। अब सवाल यह है कि क्या ईरान के लोग पुराने रास्ते पर लौटना चाहते हैं या नया रास्ता बनाना।

हाल की हलचल: विरोध प्रदर्शन और रेजा पहलवी की अचानक सक्रियता

2025 के अंत से ईरान में विरोध प्रदर्शन तेज हो गए हैं, जो अब 2026 में और बड़े हो चुके हैं। लोग सड़कों पर निकल आए हैं, आर्थिक संकट, भ्रष्टाचार और महिलाओं के अधिकारों की मांग कर रहे हैं। इन प्रदर्शनों में सुरक्षा बलों के साथ झड़पें हो रही हैं, और कुछ जगहों पर लोग भागते हुए पुलिसकर्मियों के वीडियो भी वायरल हो रहे हैं। इसी बीच रेजा पहलवी अचानक ज्यादा सक्रिय हो गए हैं। वे सोशल मीडिया पर बयान दे रहे हैं, साक्षात्कार ले रहे हैं और ईरान के लोगों से अपील कर रहे हैं। जनवरी 2026 में उन्होंने कहा कि वे वापस लौटने की तैयारी कर रहे हैं और क्रांति की जीत के समय लोगों के साथ रहेंगे। उन्होंने मजदूरों से हड़ताल करने की अपील की और कहा कि अगर सरकार इंटरनेट बंद करेगी, तो हमें उनके आय के स्रोत बंद करने चाहिए। रेजा ने एक सुरक्षित चैनल भी बनाया है, जहां सुरक्षा बलों के लोग संपर्क कर सकते हैं और विद्रोह में शामिल हो सकते हैं। कुछ रिपोर्ट्स कहती हैं कि सेना के कुछ हिस्से उनके साथ जुड़ने को तैयार हैं। यह सक्रियता अचानक क्यों? शायद क्योंकि प्रदर्शन अब इस्लामी गणराज्य को उखाड़ फेंकने की तरफ जा रहे हैं, और रेजा खुद को एकजुट करने वाले नेता के रूप में पेश कर रहे हैं। लेकिन क्या यह उनकी अपनी योजना है या अंतरराष्ट्रीय दबाव? अमेरिका और इजराइल जैसे देश ईरान के शासन के खिलाफ हैं, और कुछ स्रोत कहते हैं कि इजराइल की हमलों ने शासन को कमजोर किया है। रेजा कहते हैं कि वे लोकतंत्र चाहते हैं, न कि तानाशाही, लेकिन उनके समर्थक उन्हें शाह के रूप में देखते हैं। यह स्थिति विचारोत्तेजक है, क्योंकि एक तरफ उम्मीद है कि बदलाव आएगा, लेकिन दूसरी तरफ डर है कि नया शासन पुराने जैसा न हो।

रेजा पहलवी का नजरिया: वापसी की योजना और लोकतंत्र का वादा

रेजा पहलवी खुद को ईरान के भविष्य के नेता के रूप में देखते हैं, लेकिन वे कहते हैं कि वे राजशाही को जबरदस्ती नहीं थोपेंगे। उनके हाल के बयानों में वे 100 दिनों की संक्रमण अवधि की बात करते हैं, जहां वे अंतरिम सरकार चलाएंगे और फिर चुनाव कराएंगे। वे सेकुलर लोकतंत्र चाहते हैं, जहां धर्म और राज्य अलग हों। रेजा ने कहा कि इस्लामी गणराज्य का अंत हो रहा है और अब ईरान को वापस लेने का समय है। वे अंतरराष्ट्रीय समर्थन मांग रहे हैं, जैसे अमेरिकी राष्ट्रपति से, ताकि प्रदर्शनकारियों की मदद हो। उनकी सक्रियता में वे सेना और मजदूरों से अपील कर रहे हैं कि वे लोगों के साथ जुड़ें। कुछ इंटरव्यू में वे कहते हैं कि वे संवैधानिक राजशाही चाहते हैं, जहां राजा चुना हुआ हो, न कि वंशानुगत। लेकिन क्या यह संभव है? रेजा 65 साल के हैं और अमेरिका में रहते हैं, जहां उन्होंने राजनीतिक गतिविधियां चलाई हैं। वे ईरान के लोगों से कहते हैं कि वे तैयार हैं लौटने के लिए, और दिन करीब है। यह नजरिया विचारोत्तेजक है, क्योंकि एक तरफ वे पुरानी राजशाही की छवि से जुड़े हैं, जहां आर्थिक विकास था, लेकिन दूसरी तरफ वे लोकतंत्र का वादा कर रहे हैं। आलोचक कहते हैं कि उनके पास ईरान के अंदर कोई मजबूत संगठन नहीं है, और वे सिर्फ निर्वासन से बात कर रहे हैं। फिर भी, उनके समर्थक उन्हें राष्ट्रीय एकता का प्रतीक मानते हैं। क्या उनकी योजना कामयाब होगी? यह ईरान के लोगों पर निर्भर करता है, जो अब सड़कों पर हैं। अगर वे रेजा को चुनते हैं, तो शायद राजशाही का नया रूप आए, लेकिन अगर नहीं, तो नया गणराज्य। यह बहस हमें सोचने पर मजबूर करती है कि बदलाव कैसे आएगा।

राजशाही की वापसी: संभावनाएं और मुश्किलें

क्या ईरान में राजशाही वापस आ सकती है? यह सवाल अब गर्म है, क्योंकि प्रदर्शनों में "पहलवी लौटेंगे" जैसे नारे लग रहे हैं। रेजा पहलवी की सक्रियता से लगता है कि संभावना है, लेकिन मुश्किलें भी कम नहीं। एक तरफ, लोग मौजूदा शासन से थक चुके हैं, जहां निष्पादन ज्यादा हैं, महिलाओं पर पाबंदियां हैं और अर्थव्यवस्था खराब है। पुरानी राजशाही में जीडीपी ज्यादा थी और विकास तेज था, जो लोगों को आकर्षित करता है। रेजा कहते हैं कि वे संक्रमण में मदद करेंगे, और कुछ सुरक्षा अधिकारी उनके साथ जुड़ने को तैयार हैं। अगर सेना विद्रोह कर दे, तो शासन गिर सकता है। लेकिन दूसरी तरफ, कई लोग राजशाही नहीं चाहते। वे कहते हैं कि रेजा के पास ईरान में कोई आधार नहीं है, और यह सिर्फ पुरानी यादें हैं। कुछ रिपोर्ट्स कहती हैं कि प्रदर्शन लोकतंत्र के लिए हैं, न कि शाह के लिए। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय राजनीति भी भूमिका निभाएगी। अमेरिका और इजराइल शासन बदलाव चाहते हैं, लेकिन रूस और चीन मौजूदा शासन के साथ हैं। अगर रेजा लौटते हैं, तो क्या वे चुनाव कराएंगे या सत्ता रखेंगे? यह सवाल विचारोत्तेजक है। इतिहास में देखें तो 1979 की क्रांति के बाद लोकतंत्र की उम्मीद थी, लेकिन धार्मिक तानाशाही आई। अब अगर राजशाही आई, तो क्या वह लोकतांत्रिक होगी? या फिर नई समस्याएं? ईरान के लोग अब तय करेंगे, लेकिन बदलाव में हिंसा और अस्थिरता का खतरा है। यह स्थिति हमें सिखाती है कि राजनीतिक बदलाव आसान नहीं होता, और संतुलन बनाना जरूरी है।

अलग-अलग मत: समर्थक, विरोधी और बीच का रास्ता

रेजा पहलवी और राजशाही की वापसी पर मत अलग-अलग हैं, जो ईरान के जटिल हालात दिखाते हैं। समर्थक कहते हैं कि रेजा राष्ट्रीय एकता का प्रतीक हैं और वे देश को स्थिरता दे सकते हैं। वे पुरानी राजशाही की अच्छाइयों की बात करते हैं, जैसे शिक्षा में सुधार और महिलाओं को वोट का अधिकार। कुछ एक्स पोस्ट्स में लोग "जाविद शाह" चिल्ला रहे हैं, और रेजा को नेता मान रहे हैं। वे कहते हैं कि इस्लामी शासन ने 47 सालों में देश लूटा है, और रेजा बदलाव ला सकते हैं। लेकिन विरोधी कहते हैं कि राजशाही पुरानी बात है और ईरान को लोकतांत्रिक गणराज्य चाहिए, न कि शाह। टाइम मैगजीन जैसी रिपोर्ट्स कहती हैं कि रेजा के पास ईरान में कोई संगठन नहीं है, और वे सिर्फ बाहर से बात कर रहे हैं। कुछ लोग उन्हें इजराइल या अमेरिका का एजेंट कहते हैं। बीच का रास्ता यह है कि रेजा संक्रमण में मदद करें, लेकिन अंतिम फैसला चुनाव से हो। कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि संवैधानिक राजशाही संभव है, जहां शाह सिर्फ प्रतीक हो। यह बहस विचारोत्तेजक है, क्योंकि एक तरफ उम्मीद है कि बदलाव से आजादी आएगी, लेकिन दूसरी तरफ डर है कि नया शासन पुराने जैसा न हो। ईरान के लोग अब तय करेंगे कि वे क्या चाहते हैं - राजशाही, गणराज्य या कुछ नया। यह स्थिति हमें सोचने पर मजबूर करती है कि राजनीति में संतुलन कितना जरूरी है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

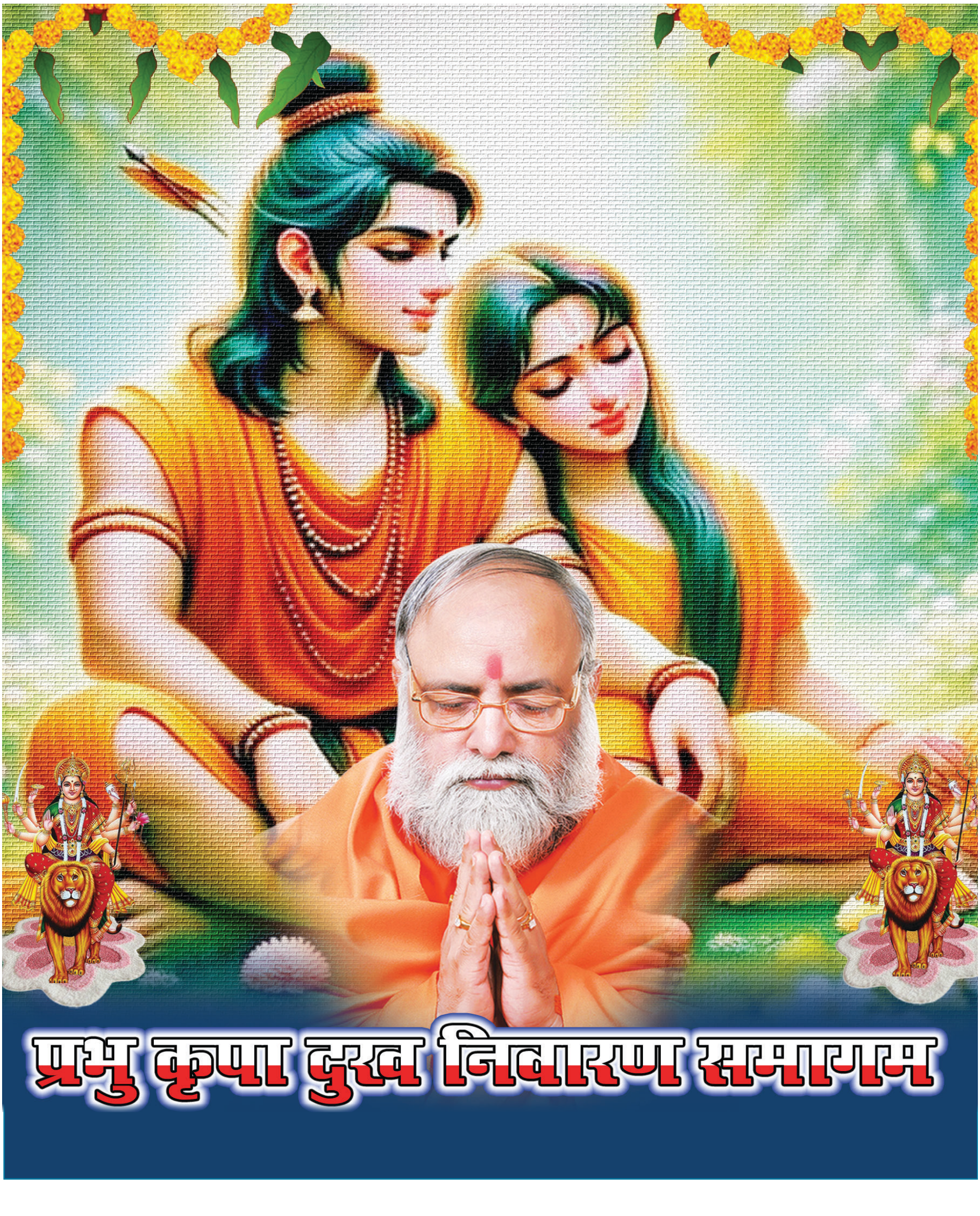

BY

Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries